A Daily News Magazine
भोपाल
शनिवार, 14 फरवरी, 2026

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 164, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

अमेरिका का झूलता हुआ पेंडुलम : आदर्शों से प्रतिक्रिया तक

सतीश झा

अमेरिका कैसे आज़ादी, लोकतंत्र और नैतिक नेतृत्व के आदर्शों से फिसलकर गुस्से, असमानता और प्रतिक्रिया की राजनीति तक पहुँचा? अमेरिका कभी एक सीधी, स्पष्ट और भरोसेमंद कहानी हुआ करता था।

दुनिया उसे एक ऐसे देश के रूप में देखती थी, जो आज़ादी को अपना आधार मानता है, लोकतंत्र को अपना स्वभाव और नैतिकता को अपनी शक्ति। किताबों में उसका चेहरा उजला दिखता था। फिल्मों में उसका आत्मविश्वास चमकता था। वॉशिंगटन और जेफ़रसन की नींव थी। लिंकन की करुणा थी। केनेडी का सपना था। युद्ध के बाद यूरोप को खड़ा करने की इच्छा थी। जापान को फिर से बनाने का संकल्प था। चीन को दुनिया से जोड़ने की दूरदृष्टि थी। विश्वविद्यालयों की प्रतिष्ठा थी। संवाद की गहराई थी। संस्कृति का आकर्षण था। दुनिया मानती थी कि अमेरिका केवल ताक़त नहीं देता, वह एक नैतिक दिशा भी दिखाता है।

यह छवि धीरे-धीरे बदली है। आज दुनिया जिस अमेरिका को देखती है, वह अक्सर अपने ही आदर्शों से उलझा दिखाई देता है। एक ऐसा नेतृत्व उभरा, जो खुलेआम कह सकता था कि वह फिफ्थ एवेन्यू पर किसी को गोली मार दे, तब भी कुछ नहीं होगा। जो कानून को सुविधा की तरह मोड़ता था। जो सत्ता को निजी सौदों का औज़ार बनाता था। जो संस्थाओं को बाधा और सच को दुश्मन मानता था। जो बातें कभी किसी लोकतंत्र को शर्मसार कर देतीं, वे सामान्य व्यवहार बनती चली गईं। नैतिक सीमाएँ धुंधली पड़ती गईं। संस्थाओं की गरिमा कमजोर होती गई। दुनिया ने देखा कि अमेरिका अपने ही बनाए मूल्यों से दूर खिसक रहा है।

यह परिवर्तन अचानक नहीं हुआ। इसके बीज बहुत पहले बोए जा चुके थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद का अमेरिका द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अमेरिका जिस आत्मविश्वास से खड़ा हुआ था, उसकी नींव आर्थिक समृद्धि, सामाजिक गतिशीलता और भविष्य के भरोसे पर टिकी थी। कारखाने चलते थे। शहर फलते-फूलते थे। नौकरियाँ स्थिर थीं। मध्यवर्ग मज़बूत था। पर समय के साथ यह ढाँचा टूटने लगा। फैक्ट्रियाँ बंद हुईं। उत्पादन विदेश गया। नौकरियाँ कम हुईं। असमानता बढ़ती चली गई। अमीर और अमीर होते गए। आम आदमी की ज़िंदगी सिमटती चली गई। छोटे शहर, कस्बे और ग्रामीण इलाके खाली होने लगे। लोग महसूस करने लगे कि देश आगे बढ़ रहा है, लेकिन वे खुद पीछे छूटते जा रहे हैं।

यहीं से भरोसे की दरार शुरू हुई। यह दरार धीरे-धीरे गुस्से में बदली। और गुस्सा राजनीति का सबसे आसान ईंधन होता है। इसी अमेरिका के जिन इलाकों में कभी काम और आत्मसम्मान था, वहाँ अब निराशा और असुरक्षा फैलने लगी। समुदाय बिखरने लगे। भविष्य धुंधला होने लगा। ऐसे माहौल में वह राजनीति पनपी, जो सरल जवाब देती है- कि समस्या बाहर से आई है, कि कोई दुश्मन है, कि दीवारें ही समाधान हैं।

जटिल आर्थिक और सामाजिक संकटों को पहचान और नस्ल के सवालों में बदल दिया गया। जब अवसर घटते हैं, तो भरोसा टूटता है। और जब भरोसा टूटता है, तो लोकतंत्र कमजोर पड़ने लगता है।

2008 में बराक ओबामा का चुनाव इस अंधेरे में एक उजली किरण था। एक अश्वेत राष्ट्रपति, जिसने आर्थिक संकट में देश को संभाला, स्वास्थ्य सुधार लागू किए, और दुनिया से संवाद को फिर जीवित किया। यह अमेरिका के आत्मसुधार की क्षमता का प्रमाण था। पर इसी क्षण से प्रतिक्रिया की राजनीति भी तेज हो गई। नस्ल का पुराना घाव फिर उभर आया। यह डर फैलाया गया कि देश बदल रहा है, कि पहचान खो रही है। झूठे आरोप लगे कि ओबामा अमेरिकी नहीं हैं। यह प्रतिक्रिया जितनी भावनात्मक थी, उतनी ही राजनीतिक भी। इसी दौर में ध्रुवीकरण गहराया, और समझौते की संस्कृति कमजोर होती चली गई।

2010 के बाद टी पार्टी आंदोलन और फिर 2016 में डोनाल्ड ट्रंप का उदय इसी पृष्ठभूमि की उपज था। ट्रंप ने खुद को व्यवस्था-विरोधी बताया, आम लोगों की आवाज़ कहा। लेकिन उनकी नीतियों ने असमानता को और बढ़ाया, संस्थाओं को कमजोर किया और समाज को और विभाजित कर दिया। मीडिया के समानांतर संसार बने। सच और झूठ के बीच की रेखा धुंधली होती चली गई। भरोसा, जो लोकतंत्र की आत्मा है, लगातार क्षरित होता गया।

देश नीति में भी यही प्रवृत्ति दिखी।

इराक और लीबिया जैसे युद्धों ने पहले ही वैश्विक भरोसे को कमजोर किया था। फिर 'अमेरिका फर्स्ट' का नारा आया – जलवायु समझौतों से दूरी, बहुपक्षीय संस्थाओं से अलगाव, सहयोग की जगह टकराव की भाषा। और अंततः 6 जनवरी 2021 का हमला, जिसने दिखा दिया कि लोकतंत्र केवल बाहर नहीं, भीतर से भी ख़तरे में पड़ सकता है।

यह सब केवल एक व्यक्ति की कहानी नहीं है। यह एक पूरे राजनीतिक और सामाजिक ढांचे की थकान का परिणाम है। संस्थाएँ थक चुकी हैं। राजनीति कठोर हो गई है। धन का प्रभाव बढ़ गया है। चुनावी लाभ लोकतांत्रिक मर्यादाओं से ऊपर चला गया है। नागरिक को उपभोक्ता में बदल दिया गया है। और सार्वजनिक जीवन से नैतिकता धीरे-धीरे बाहर होती चली गई है।

फिर भी, अमेरिका की कहानी अभी समाप्त नहीं हुई है। यह देश कई बार अपने अंधेरों से बाहर आया है- गृहयुद्ध के बाद, महामंदी के बाद, नागरिक अधिकार आंदोलन के बाद। उसकी सबसे बड़ी ताकत उसकी संस्थाएँ नहीं, बल्कि उसकी आत्मालोचना की क्षमता रही है। सवाल पूछने की परंपरा। बहस की संस्कृति। सुधार की इच्छा।

आज फिर वही क्षण सामने है। अगर अमेरिका को अपनी दिशा वापस पानी है, तो उसे असमानता से लड़ना होगा। शिक्षा और स्वास्थ्य में निवेश बढ़ाना होगा। काम और सम्मान को फिर जोड़ना होगा। और सबसे ज़रूरी - एक ऐसी साझा कहानी बनानी होगी, जिसमें हर नागरिक खुद को शामिल महसूस करे। अमेरिका का पेंडुलम आदर्शों से प्रतिक्रिया की ओर झूल चुका है। अब प्रश्न यह है कि क्या वह फिर न्याय, संतुलन और भरोसे की ओर लौट पाएगा। दुनिया यह प्रश्न इसलिए नहीं पूछ रही कि वह अमेरिका से प्रेम करती है, बल्कि इसलिए कि उसकी दिशा का असर पूरी दुनिया पर पड़ता है। जब अमेरिका की रोशनी मंद होती है, तो अंधेरा केवल उसके भीतर नहीं फैलता– वह दूर-दूर तक जाता है।

(सत्य हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

● मोदी ने नए प्रधानमंत्री ऑफिस का किया उद्घाटन

पीएम ने बिल्डिंग पर लिखा है - नागरिक देवो भव:

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को 'सेवा तीर्थ' कॉम्प्लेक्स का उद्घाटन किया। इसमें अब प्रधानमंत्री कार्यालय, नेशनल सिक्योरिटी काउंसिल सचिवालय और कैबिनेट सचिवालय काम करेंगे। पीएमओ आज से रायसीना हिल स्थित साउथ ब्लॉक से सेवा तीर्थ में शिफ्ट हो गया है। उद्घाटन के दौरान प्रधानमंत्री ने नए कॉम्प्लेक्स में लगी 'सेवा तीर्थ' की पट्टिका का अनावरण किया। परिसर की दीवार पर देवनागरी लिपि में 'सेवा तीर्थ' लिखा है। इसके नीचे 'नागरिक देवो भव' (नागरिक भगवान के समान हैं) का मंत्र भी लिखा गया है। न्यूज एजेंसी के अनुसार, पीएम ने सेवा तीर्थ से एक सार्वजनिक कार्यक्रम को संबोधित किया।

इसके अलावा, वे पुराने पीएम ऑफिस में केंद्रीय कैबिनेट की विशेष बैठक भी की। यह बैठक शुक्रवार शाम 4 बजे तय थी। यह ब्रिटिश काल की सेक्रेटेरिएट बिल्डिंग में आखिरी कैबिनेट बैठक थी। प्रधानमंत्री का ऑफिस 1947 से साउथ ब्लॉक में रहा है। ये इमारत करीब 78 सालों से देश की सत्ता का केंद्र रही है। 2014 से, मोदी सरकार ने ब्रिटिश शासकों के प्रतीकों से दूर जाने के लिए लगातार कदम उठाए हैं। सेवा तीर्थ कॉम्प्लेक्स में 3 इमारतें हैं।

1189 करोड़ की लागत से बना सेवा तीर्थ

सेवा तीर्थ का मतलब है 'सेवा का स्थान'। पहले इसका नाम 'एग्जीक्यूटिव एन्क्लेव' रखा गया था, लेकिन 2 दिसंबर 2025 में इसका नाम बदलकर सेवा तीर्थ रखा गया। यह नई दिल्ली में दारा शिकोह रोड पर एग्जीक्यूटिव एन्क्लेव में स्थित है। यह करीब 2.26 लाख वर्ग फीट (करीब 5 एकड़) में बना है। इसे एल एंड टी कंपनी ने 1189 करोड़ में बनाया है। नए पीएमओ के पास ही प्रधानमंत्री का नया आवास भी बन रहा है।

लोकसभा में 'हरदीप पुरी इस्तीफा दो' के नारे लगे

● भारी हंगामा, संसद की कार्यवाही 9 मार्च तक स्थगित

बीजेपी बोली-राहुल सत्ता पाने को देश का बंटवारा चाहते थे

नई दिल्ली (एजेंसी)। बजट सत्र के 13वें दिन लोकसभा और राज्यसभा की कार्यवाही पूरे दिन नहीं चल पाई। लोकसभा की कार्यवाही करीब 10 मिनट ही चल पाई। वहीं, राज्यसभा की कार्यवाही दो घंटे तक चल पाई। अब दोनों सदनों की कार्यवाही 9 मार्च से शुरू होगी। शुक्रवार को सुबह 11 बजे सदन शुरू होते ही विपक्षी सांसदों ने हरदीप पुरी इस्तीफा दो के नारे लगाने शुरू कर दिए। इसके 5 मिनट बाद ही सदन स्थगित कर दी गई। 12 बजे सदन की कार्यवाही दोबारा शुरू हुई। इस बार हंगामे के बीच एजुकेशन और कानून मंत्रालय से जुड़े कुछ बिल पेश किए। इसके बाद चेयर पर मौजूद संध्या राय ने लोकसभा 9 मार्च तक के लिए स्थगित कर दी। संसद का बजट सत्र दो चरण में हो रहा है। पहला- 28 जनवरी से 13 फरवरी तक है। दूसरा चरण 23 दिन के ब्रेक के बाद 9 मार्च से शुरू होगा, जो 2 अप्रैल तक चलेगा। इधर बीजेपी सांसद ने कहा सत्ता पाने के लिए बंटवारे की प्लानिंग कर रहे थे।

● **आरजेडी सांसदों का प्रदर्शन, पीएम मोदी–नीतिश के इस्तीफे की मांग**– राष्ट्रीय जनता दल के सांसदों ने संसद परिसर में विरोध प्रदर्शन किया। उन्होंने बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के इस्तीफे की मांग की और केंद्र से आरक्षण नीति में राजनीतिक अल्पसंख्यकों और ओबीसी के लिए कोटा बढ़ाने का आग्रह किया। प्रदर्शनकारी अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों, अन्य पिछड़े वर्गों और अत्यंत पिछड़े वर्गों के लिए 65 फीसदी आरक्षण की मांग कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जनगणना 2027 के प्रथम चरण के राज्य स्तरीय प्रशिक्षण सम्मेलन को किया संबोधित

जनगणना से ही समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास पहुंचाने की रणनीति होती है तय : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि जनगणना देश की सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण डाटा प्रक्रिया है। जनगणना के आधार पर सरकार की योजनाएं बनती हैं, संसाधनों का वितरण तय होता है और समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास पहुंचाने की रणनीति तैयार होती है। आज भारत विश्व का सर्वाधिक आबादी वाला राष्ट्र है। यह जनगणना केवल राष्ट्रीय नहीं बल्कि वैश्विक महत्व की भी है। जनगणना का कार्य केवल प्रशासनिक प्रक्रिया तक सीमित नहीं है बल्कि यह भारत के भविष्य की दिशा तय करने वाला सबसे व्यापक और निर्णायक अभियान है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव जनगणना-2027 के प्रथम चरण के लिए आयोजित राज्य स्तरीय प्रशिक्षण सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में दीप प्रज्ज्वलित कर सम्मेलन का शुभारंभ किया। राज्य स्तरीय प्रशिक्षण सम्मेलन में जनगणना-2027 की प्रक्रिया पर केंद्रित लघु फिल्म का प्रदर्शन भी किया गया। राज्य स्तरीय प्रशिक्षण सत्र में मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन, रजिस्ट्रॉर जनरल तथा जनगणना आयुक्त श्री मृत्युंजय कुमार नारायण, अपर मुख्य सचिव (मुख्यमंत्री कार्यालय) श्री नीरज मंडलोई, अपर मुख्य सचिव गृह श्री शिवशेखर शुक्ला उपस्थित थे। सम्मेलन में प्रदेश के सभी संभागायुक्त, कलेक्टर्स, नगर निगम आयुक्त तथा अन्य प्रशासनिक अधिकारी सम्मिलित हुए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने डिजिटल जनगणना कराने का ऐतिहासिक फैसला लिया है। देश में आखिरी बार वर्ष 1931 में सामाजिक स्तर की जनगणना की गई थी। उन्होंने जनगणना की प्रक्रिया में गांवों, मजरों-टोलों के साथ-साथ बेचिराग गांवों की स्थिति के आंकलन की व्यवस्था करने की भी आवश्यकता बताई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में सड़क, अस्पताल, स्कूल एवं अन्य कार्यों की योजनाएं जनगणना के आंकड़ों के आधार पर ही बनाई जाती हैं। जनगणना केवल संख्या गिनने की प्रक्रिया नहीं है, यह राज्य की संवेदनशीलता, प्रशासन की विश्वसनीयता, प्रतिबद्धता और शासन की पारदर्शिता की परीक्षा है। प्रदेश के अलग-अलग अंचलों की चुनौतियां भिन्न हैं। संवेदनशील क्षेत्रों में विशेष रणनीति अपनाते हुए समयबद्ध रूप से जनगणना की जिम्मेदारियों का निर्वहन किया जाए। इस पूरी प्रक्रिया की सफलता का केन्द्र मैदानी प्रशासनिक अधिकारी हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कलेक्टर्स और कमिश्नर्स से जनगणना कार्य को रणनीतिक नेतृत्व प्रदान करते हुए जनगणना के सभी उद्देश्यों की समय सीमा में पूर्ति करने का आह्वान किया।

आज मुख्यमंत्री डॉ. यादव पंधाना से करेंगे लाड़ली बहनों के खातों में राशि अंतरित

विकास कार्यों का करेंगे भूमि-पूजन एवं लोकार्पण

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव शनिवार को खंडवा जिले के पंधाना से 14 फरवरी शनिवार को प्रदेश की 1.25 करोड़ लाड़ली बहनों के खातों में 1836 करोड़ रुपये अंतरित करेंगे। योजना में अब तक लाड़ली बहनों को 52,304 करोड़ रूपये की राशि अंतरित की गई है।कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. यादव 255 करोड़ रूपए लागत के विकास कार्यों का भूमि-पूजन एवं 354 करोड़ रूपए 11 विकास कार्यों का लोकार्पण करेंगे।

शरद की सुबह

प्यार किसी को करना लेकिन
कह कर उसे बताना क्या
अपने को अर्पण करना पर
और को अपनाना क्या

गुण का ग्राहक बनना लेकिन
गा कर उसे सुनाना क्या
मन के कल्पित भावों से
औरों को भ्रम में लाना क्या

ले लेना सुगंध सुमनों की
तोड़ उन्हें मुरझाना क्या
प्रेम हार पहनाना लेकिन
प्रेम पाश फैलाना क्या

त्याग अंक में पले प्रेम शिशु
उनमें स्वार्थ बताना क्या
दे कर हृदय हृदय पाने की
आशा व्यर्थ लगाना क्या।

– हरिवंशराय बच्चन

सीएम स्टालिन का बड़ा दांव, कर दिया खेला

● 1.31 करोड़ महिलाओं के खाते में भेजे 5-5 हजार

सत्ता में वापसी पर डबल होगी रकम, सीएम का ऐलान

नई दिल्ली (एजेंसी)। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम. के. स्टालिन ने 1.31 करोड़ महिला लाभार्थियों के लिए पांच हजार रुपये की मदद की घोषणा की। इस घोषणा के कुछ समय बाद ही स्टालिन ने अपना वादा भी पूरा किया। तमिलनाडु में महिला लाभार्थियों के खाते में आज सुबह 6 बजे ही पांच-पांच हजार रुपये आ गए। सीएम स्टालिन ने अपनी घोषणा के साथ ही यह भी वादा किया कि अगर वे फिर से चुनकर आते हैं, तो इस मासिक सहायता राशि को 1,000 रुपये की जगह 2,000 रुपये कर दिया जाएगा। सीएम स्टालिन ने घोषणा करते हुए कहा कि महिलाओं के लिए महीने की आर्थिक मदद कोई भलाई का काम नहीं है, बल्कि यह उनके हक का मामला है।

● **हर महीने मिलने वाली मदद को दोगुना करने का दावा**– सीएम स्टालिन ने महिलाओं को संबोधित करते हुए एलान किया, मैं मेरी बहनों से वादा करता हूं, अगर मैं फिर से चुनकर आता हूं तो हर महीने मिलने वाले 1,000 रुपये की मदद राशि को दोगुना करके 2,000 रुपये कर दिया जाएगा। सीएम स्टालिन ने इस स्कीम को स्वर्गीय एम. करुणानिधि की समाज कल्याण और सबको साथ लेकर चलने वाली ग्रोथ की विरासत का हिस्सा बताया।

● राहुल गांधी का समर्थन और तेजस्वी यादव पर हमला

प्रशांत किशोर ने दिए भविष्य की राजनीति के संकेत

मुजफ्फरपुर (एजेंसी)। बिहार नव निर्माण अभियान की शुरुआत से पहले जन सुराज के सूत्रधार प्रशांत किशोर ने अपने बयानों से राज्य की राजनीति में नई हलचल पैदा कर दी है। एक ओर उन्होंने पूर्वी चंपारण में कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी का समर्थन करते हुए उन्हें संसद में बोलने देने की वकालत की, वहीं मुजफ्फरपुर पहुंचकर राजद नेता तेजस्वी यादव पर भ्रष्टाचार के मुद्दे को लेकर तीखा हमला बोला।

राजनीतिक जानकार इसे उनकी भविष्य की राजनीतिक दिशा का संकेत मान रहे हैं। मुजफ्फरपुर के पावर हाउस चौक रोड स्थित एक होटल में पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ बैठक के दौरान प्रशांत किशोर ने कहा कि आज वोट जनहित के मुद्दों पर नहीं, बल्कि पाकिस्तान और चीन के नाम पर मांगे जा रहे हैं। जनता को यह तय करना है कि उसे सोने का अंडा देने वाली मुर्गी चाहिए या एक बार में पूरी मुर्गी। उन्होंने कहा कि जन सुराज की लड़ाई जनता के हित में है।

● **10 हजार की स्थायी व्यवस्था बन सकती थी–** उन्होंने दावा किया कि यदि जनता उन्हें मौका देती तो जो 10 हजार रुपये एक बार दिए गए, उसे स्थायी व्यवस्था का रूप दिया जा सकता था। साथ ही पेंशन की राशि 3000 रुपये तक की जा सकती थी। उन्होंने कहा कि वे लंबे समय से बिहार की जनता को समझाने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन सफल नहीं हो सके। अब जनता ने जिस सरकार को चुना है, वही अगले पांच वर्षों तक शासन करेगी। तेजस्वी यादव पर हमला करते हुए प्रशांत किशोर ने कहा कि उनके मुंह से भ्रष्टाचार की बात वैसी ही लगती है जैसे कोई शेर कहे कि सबको शाकाहारी हो जाना चाहिए। उनके अनुसार, इस मुद्दे पर उनका बोलना उचित नहीं है, फिर भी वे बयान दे रहे हैं।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 20 °c
न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शनिवार, 14 फरवरी 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

भोपाल में चरस सहित दो तस्कर गिरफ्तार

आरोपियों के कब्जे से 495 ग्राम मादक पदार्थ मिला,एनडीपीएस एक्ट के तहत की कार्रवाई

भोपाल (नप्र)। भोपाल क्राइम ब्रांच ने 495 ग्राम चरस एवं दो मोबाइल फोन के साथ दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। उनके खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत प्रकरण दर्ज किया है। आरोपियों को कोर्ट में पेश कर दिया गया है।

एडिशनल डीसीपी शैलेंद्र सिंह चौहान ने बताया कि मुखबिर से सूचना मिली थी कि टीआईटी मैदान खंडहर के पास गोविंदपुरा में दो युवक खड़े हुए हैं। उनके पास मादक पदार्थ चरस है, जिसे बेचने के लिए ग्राहक का इंतजार कर रहे हैं।

राजा मियां शेख आरिफ

यदि उन्हें जल्दी नहीं पकड़ा गया तो वह चरस को किसी को बेचकर निकल जाएंगे। सूचना मिलते ही क्राइम ब्रांच की टीम मौके पर पहुंची तथा घेराबंदी कर युवकों को दबोच लिया।

एक तस्कर बैतूल का रहने वाला

पूछताछ में एक आरोपी शेख आरिफ पिता शेख फारुख (44) निवासी थाना कोठी बाजार, जिला बैतूल और दूसरे ने अपना नाम राजा मियां पिता मो. जमील (51) निवासी फरहतअफ्जा, ऐशबाग का बताया है। दोनों के कब्जे से 495 ग्राम चरस पाई गई। क्राइम ब्रांच ने दोनों के खिलाफ एनडीपीएस का प्रकरण दर्ज कर उन्हें गिरफ्तार कर लिया है।

विक्रम भट्ट को राहत नहीं, पत्नी जेल से रिहा होगी

- सुप्रीम कोर्ट में अगली सुनवाई 18 को; फिल्म बनाने के लिए 30 करोड़ की धोखाधड़ी

उदयपुर (एजेंसी)। फिल्म बनाने के नाम पर 30 करोड़ रुपए की धोखाधड़ी मामले में बॉलीवुड डायरेक्टर विक्रम भट्ट की पत्नी श्वेतांभरी भट्ट को सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को अंतरिम जमानत दे दी। वहीं विक्रम भट्ट को राहत नहीं मिली है। सुप्रीम कोर्ट में विक्रम भट्ट की ओर से एडवोकेट मुकुल रोहतगी

और परिवादी डॉ. अजय मुर्डिया की ओर से एडवोकेट हर्ष सुराना ने पैरवी की। अब दोनों की नियमित जमानत पर अगली सुनवाई 18 फरवरी को होगी। परिवादी डॉ. अजय मुर्डिया के वकील मंजूर हुसैन ने बताया- 31 जनवरी 2026 को राजस्थान हाईकोर्ट ने भट्ट दंपति की जमानत याचिका खारिज की थी। इसके बाद दंपति ने सुप्रीम कोर्ट जाकर नियमित जमानत के लिए स्पेशल लीव पिटिशन दायर की थी। सुप्रीम कोर्ट ने इसे स्वीकार करते हुए आज सुनवाई की।

हिंदुस्तान की खाएंगे, लेकिन वंदे मातरम् नहीं गाएंगे

- योगी बोले-ऐसे लोगों को यहां रहने का अधिकार नहीं, कान पकड़कर बाहर किया जाए

लखनऊ (एजेंसी)। यूपी विधानमंडल में बजट सत्र का आज 5वां दिन है। सीएम विधानसभा में बोल रहे हैं। उन्होंने कहा- वंदे मातरम का अपमान कोई नहीं कर सकता। ये हिंदुस्तान की खाएंगे, लेकिन वंदे मातरम नहीं गाएंगे। ऐसे लोगों को यहां रहने का अधिकार नहीं है। जो इसका विरोध करता है, उसका कान पकड़कर बाहर करना चाहिए। सीएम ने कहा- आज यूपी में कोई भी तीर्थ स्थल हो, किसी भी धर्म के हो, उसे पौराणिक विषयों से जोड़ा गया। उसे विकसित किया। अर्थ व्यवस्था को मजबूत किया। वहां फूल बेचने वाला ब्राह्मण नहीं होगा, टैक्सी चलाने वाले ब्राह्मण नहीं होगा। ब्राह्मण पुजारी हो सकता है। लेकिन बाकी सब दूसरी जाति के हैं, मतलब हर वर्ग का व्यक्ति फायदा पा रहा है। 9 वर्ष की यह जो यात्रा है, वह सरकार की अपराध-अव्यवस्था से अनुशासन की यात्रा है। उपद्रव से उत्सव की यात्रा है, समस्या से समाधान की यात्रा है। विश्वास से अविश्वास की यात्रा है। यह यात्रा सत्ता प्राप्त करने की होड़ नहीं है, इसे प्राप्त करने के लिए सरकार की

नियत साफ थी। इससे पहले सीएम ने नेता प्रतिपक्ष माता प्रसाद पांडेय से कहा- आप उचित बात करते हैं, लेकिन पता नहीं क्यों आपके और संजय निषाद के बीच रंजिश चल रही है।

ऐसा लगता है कि आपकी भी पोखरी यानी तालाब का संजय निषाद पट्टा कराकर आ गए हैं। दरअसल, इससे पहले आरक्षण मुद्दे पर माता प्रसाद पांडेय और संजय निषाद के बीच तीखी बहस हो गई थी।

- **महाना भाजपा विधायक पर भड़के, हेडफोन फेंका-** सुबह 11 बजे विधानसभा की कार्यवाही शुरू होने के थोड़ी देर बाद ही टोका-टोकी करने से अध्यक्ष सतीश महाना भाजपा विधायक केतकी सिंह पर भड़क गए। उन्होंने कहा- आप बैठिए। सदन चलाना मेरा काम है। गुस्से में उन्होंने हेडफोन निकालकर फेंक दिया। 10 मिनट के लिए सदन स्थगित करके कुर्सी से उठकर चले गए। वापस आए तो कांग्रेस विधायक आराधना मिश्रा ने कहा- आप मुस्कुराते अच्छे लगते हैं। फिर उन्होंने वित्त मंत्री से महाना को मनाने के लिए शायरी सुनाने की अपील की। तभी सपा के कमाल अख्तर ने शायरी सुनाई- तुम रूठा न करो, सबकी जान चली जाती है। तुम हंसते रहते हो, तो बिजली-सी चमक जाती है। इस पर वित्त मंत्री ने कहा- एक बात सुन लो, महबूबा वाली शायरी यहां न सुनाया करो। इसके

बाद शायरी सुनाई। आज दुनिया को तरकीब बता दी जाए, दुश्मनी प्यार की लहरों में बहा दी जाए। मंत्री बोले- यूपी में आउटसोर्स कर्मचारी नियमित नहीं होंगे विधानसभा में श्रम मंत्री अनिल राजभर ने एक सवाल के जवाब में कहा कि यूपी में आउटसोर्स कर्मचारियों को नियमित (रेगुलर) नहीं किया जा सकता है। उनके साथ मनमानी न हो, इसलिए उनके लिए अलग से निगम बनाया गया है।

उद्योग सहभागिता से ही सार्थक होंगे सुधार: केन्द्रीय सचिव श्रीमती राव

विनियमन शिथिलीकरण चरण-द्वितीय के तहत अनुपालन सरलीकरण पर हुआ व्यापक मंथन

भोपाल। सचिव केंद्रीय कपड़ा मंत्रालय श्रीमती नीलम शमी राव ने कहा है कि उद्योगों को जमीनी स्तर पर सरल, पारदर्शी और समयबद्ध व्यवस्था का वास्तविक अनुभव मिलना चाहिए। सुधार केवल अधिसूचनाओं तक सीमित न रहें, बल्कि प्रक्रियाओं की गति और स्पष्टता में दिखाई दें। उद्योगों को निवेशक भर नहीं, बल्कि शासन सुधार की प्रक्रिया का सहभागी भी बनाया जाए और उनके सुझावों को नीतियों के क्रियान्वयन में समाहित किया जाए।

केन्द्रीय सचिव राव शुक्रवार को एमपीआईडीसी भोपाल में आयोजित विनियमन शिथिलीकरण द्वितीय चरण के अंतर्गत अनुपालन में कमी पर केंद्रित कार्यबल की प्रथम बैठक को संबोधित कर रहीं थी। बैठक में उद्योग संघों, निवेश संवर्धन से जुड़े प्रतिनिधियों और संबंधित विभागों के अधिकारियों के साथ राज्य में नियामकीय ढांचे को और अधिक सरल, तर्कसंगत एवं उद्योग अनुकूल बनाने की दिशा में विस्तृत चर्चा हुई।

प्रमुख सचिव औद्योगिक नीति एवं निवेश प्रोत्साहन श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह ने बताया कि मध्यप्रदेश ने विनियमन शिथिलीकरण चरण-प्रथम के अंतर्गत 23 प्राथमिकता क्षेत्रों में सभी सुधारों का सफल क्रियान्वयन कर एक मजबूत आधार तैयार किया है। भूमि उपयोग, भवन निर्माण अनुज्ञा, श्रम प्रावधानों, सार्वजनिक उपयोगिताओं और प्रशासनिक प्रक्रियाओं में किए गए संरचनात्मक बदलावों ने निवेश के लिए अधिक सुव्यवस्थित वातावरण तैयार किया है।

द्वितीय चरण के अंतर्गत 28 प्राथमिक क्षेत्रों में समयबद्ध सुधारों का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसका उद्देश्य केवल नियमों की संख्या घटाना नहीं, बल्कि अनुपालन बोझ को कम करना, विभागीय प्रक्रियाओं में दोहराव समाप्त करना और अनुमतियों को अधिक त्वरित बनाना है। इस चरण में व्यापक संशोधनों और समग्र सुव्यवस्थित ढांचे के माध्यम से परिवर्तन सुनिश्चित किए जा रहे हैं।

बैठक में बताया गया कि पूर्णतः डिजिटलीकरण अनुमोदन प्रणाली, एकीकृत एकल खिड़की व्यवस्था तथा मध्यप्रदेश जन विश्वास अधिनियमों के अंतर्गत 108 प्रावधानों के अपराध मुक्तिकरण जैसे कदमों ने राज्य को नियंत्रण-प्रधान व्यवस्था से विश्वास-आधारित और उत्तरदायी शासन मॉडल की ओर अग्रसर किया है। निवेशकों से सतत संवाद, पारदर्शी प्रक्रियाएं और समयबद्ध क्रियान्वयन की प्रतिबद्धता के साथ मध्यप्रदेश औद्योगिक निवेश के लिए एक सशक्त, विश्वसनीय और प्रतिस्पर्धी पारिस्थितिकी तंत्र को निरंतर मजबूत कर रहा है, जहां सुधारों का उद्देश्य अनुपालन में कमी, प्रक्रियाओं में स्पष्टता और निवेश में गति लाकर प्रदेश की आर्थिक समृद्धि को सुदृढ़ करना है।

'धीरेन्द्र शास्त्री को बीजेपी ऑफिस में बैठना चाहिए'

माला, भाला रखने वाले बयान पर कांग्रेस नेता मुकेश नायक बोले- वे विभाजनकारी हैं

भोपाल (नप्र)। सीताराम-सीताराम करने भर से धर्म नहीं बचेगा, बल्कि माला और भाला रखना होगा। हमें मठों से निकलकर धर्म की रक्षा करनी होगी। ये बात बागेश्वर धाम में 301 कन्याओं के विवाह महोत्सव के दौरान गुरुवार को पंडित धीरेंद्र शास्त्री ने कही। इस बयान पर कांग्रेस ने उन्हें विभाजनकारी बताते हुए बीजेपी ऑफिस में बैठने की सलाह दी है। वहीं बीजेपी ने कांग्रेस को सनातन विरोधी बताया है।

शास्त्री को एक-दो घंटे बीजेपी दफ्तर में बैठना चाहिए- धीरेन्द्र शास्त्री के इस बयान पर कांग्रेस मीडिया विभाग के अध्यक्ष और पूर्व मंत्री मुकेश नायक ने कहा- शास्त्री जी को एक काम करना चाहिए कि इनको विधिवत एक-दो घंटे का समय निकालकर बीजेपी के दफ्तर में बैठना चाहिए। ये बीजेपी के कार्यकर्ता हैं और हमेशा विभाजनकारी बात करते हैं। इन पर तो मुकद्मा दर्ज होना चाहिए। ये भारत का सौहार्द्र बिगाड़ने वाले लोग हैं। सीएम के बागेश्वर धाम जाने पर मुकेश नायक ने कहा- वो (धीरेन्द्र शास्त्री) उनके इतने बड़े कार्यकर्ता हैं तो वे (सीएम) जाएंगे ही।

खुलेआम धर्म को राजनीति का औजार बनाया जा रहा

मुकेश नायक ने कहा- सारा प्रदेश और देश देख रहा है कि क्या चल रहा है? ऐसी धर्मांधता, इस तरह की ठगी और खुलेआम धार्मिक आस्थाओं का दोहन किया जा रहा। खुलेआम धर्म को राजनीति का औजार बनाना, लोगों की श्रद्धा और विश्वास का दोहन किया जा रहा है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है-बेचहिं बेदु धरमु दुहि लेहीं। पिसुन पराय पाप कहि देहीं।

इसका अर्थ है कि कलियुग में लोग वेदों को बेचेंगे (शिक्षा का व्यवसायीकरण), धर्म का सहारा लेकर अपना स्वार्थ साधेंगे, चुगलखोर होंगे और दूसरों की निंदा करेंगे।

बांग्लादेश चुनाव में बीएनपी की बड़ी जीत

- 20 साल बाद कब्जा ,तारिक का पीएम बनना तय

ढाका (एजेंसी)। बांग्लादेश में गुरुवार को हुए आम चुनाव में बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी ने बड़ी जीत दर्ज की है। बीएनपी ने 299 सीटों में से 209 हासिल कर बहुमत के लिए जरूरी 150 के आंकड़े को पार कर लिया। अब तक 286 सीटों के नतीजे घोषित हो चुके हैं। जमात-ए-इस्लामी के नेतृत्व वाले 11 दलों के गठबंधन को अब तक 70 सीटें मिली हैं। जमात प्रमुख शफीकुर रहमान ने ढाका-15 सीट से जीत दर्ज की है। देश में करीब 20 साल बाद बीएनपी की सरकार बनी है। 2008 से 2024 तक वहां शेख हसीना की आवामी लीग सत्ता में थी। इस जीत के साथ पूर्व प्रधानमंत्री खालिदा जिया के

बेटे और बीएनपी अध्यक्ष तारिक रहमान का प्रधानमंत्री बनना लगभग तय माना जा रहा है। तारिक ने दो सीटों से चुनाव लड़ा था और दोनों पर जीत हासिल की है। वे पिछले साल दिसंबर में 17 साल बाद देश लौटे थे।

- ऑपरेशन सिंदूर में पाक के लिए बन गई थीं काल

भारत रूस से खरीदेगा 288 एस-400 मिसाइलें

नई दिल्ली (एजेंसी)। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की अध्यक्षता में रक्षा अधिग्रहण परिषद ने रूस से 288 एस-400 मिसाइलों की खरीद को आवश्यक स्वीकृति प्रदान कर दी है। इन मिसाइलों की अनुमानित लागत 10,000 करोड़ है। यह निर्णय मई 2025 में हुए ऑपरेशन सिंदूर के दौरान इस्तेमाल की गई मिसाइलों के स्टॉक को फिर से भरने और देश की हवाई रक्षा क्षमताओं को मजबूत करने के लिए लिया गया है। सूत्रों के अनुसार, डीएसी द्वारा मंजूर की गई लिस्ट में 120 छोटी दूरी वाली और 168 लंबी दूरी वाली मिसाइलें शामिल हैं। इन मिसाइलों की खरीद फास्ट ट्रैक प्रोसीजर के माध्यम से की जाएगी। इसके अतिरिक्त, भारत को पहले से अनुबंधित दो और एस-400 सिस्टम इसी साल

जून और नवंबर में मिलने वाले हैं। वायुसेना एस-400 के साथ-साथ पैंटसिर छोटी दूरी वाली प्रणाली को खरीदने का प्रस्ताव भी रख रही है, जो ड्रोन और कामिकेज ड्रोन से निपटने में प्रभावी है। एस-400 मिसाइलों का स्टॉक बढ़ाना इसलिए जरूरी समझा गया क्योंकि भारतीय सशस्त्र बलों ने मई 2025 में ऑपरेशन सिंदूर के दौरान इनका व्यापक उपयोग किया था। इन मिसाइलों ने पाकिस्तानी लड़ाकू विमानों, अर्ली वार्निंग एयरक्राफ्ट और सशस्त्र ड्रोन को मार गिराया था। खास बात यह है कि जब भारत ने एस-400 मिसाइल का उपयोग करके पाकिस्तान के पंजाब में 314 किमी की दूरी पर एक बड़े विमान को मार गिराया, तो पाकिस्तान ने अपने लगभग सभी ऑपरेशनल विमानों को अफगानिस्तान और ईरान के पास के हवाई अड्डों पर स्थानांतरित कर दिया था। आदमपुर और भुज सेक्टर में तैनात एस-400 सिस्टम के डर से 9-10 मई को पाकिस्तानी वायुसेना ने कोई कार्रवाई नहीं की। अधिग्रहण प्रक्रिया सख्त निगरानी में हुई।

मुस्लिम परिवार ने 80 लाख की जमीन मंदिर को दी

- निर्माण का खर्च भी उठाएंगे ,मोहाली में रजिस्ट्री करवाने शाही इमाम को बुलाया

मोहाली (एजेंसी)। पंजाब के संगरूर में हिंदू परिवार के मस्जिद के लिए जमीन दान करने के बाद अब मोहाली के झामपुर में एक मुस्लिम परिवार ने 80 लाख रुपए की 325 गज जमीन मंदिर निर्माण के लिए दान दी है।

खास बात यह है कि मंदिर निर्माण का खर्च भी वही परिवार उठाएगा। गुरुवार (12 फरवरी) को शाही इमाम मौलाना मोहम्मद उस्मान रहमान लुधियानवी ने रजिस्ट्री के पेपर मंदिर कमेटी को सौंपे। वहीं हवन यज्ञ के बाद मंदिर के निर्माण का कार्य भी शुरू कर दिया गया।

यहां पर हनुमान जी और सनातन मंदिर बनाया जा रहा है। शाही इमाम ने कहा कि पंजाब की धरती से मिठास का संदेश पूरे भारत के लिए अमृत है। यह एकता की मिसाल है। वहीं जमीन दान देने वाले मोहम्मद इमरान ने कहा कि मेरा सपना अस्पताल खोलने का है, ताकि गरीब लोगों

को इलाज मिल सके।

मंदिर के लिए कोई जगह नहीं थी- शाही इमाम ने बताया कि मोहाली से सटे झामपुर इलाके में मंदिर के लिए जगह नहीं थी, क्योंकि नई आबादी बस रही थी। ऐसे में धार्मिक स्थानों के लिए जगह जरूरी है, सनातन धर्म के लिए कोई स्थान नहीं था। पंडित राजाराम ने मोहम्मद इमरान हैप्पी से संपर्क किया और मंदिर कमेटी के लिए जगह मांगी। उन्होंने (हैप्पी ने) मुझसे पूछा तो मैंने कहा कि इस्लामी देशों में भी हिंदू-सिख भाईचारे के लोग जाकर बसते हैं, तो उनकी धार्मिक आस्था को ध्यान में रखते हुए वहां धार्मिक स्थान बनाए जाते हैं। दुबई में गुरुद्वारा नानक दरबार साहिब है, इसी तरह मंदिर भी हैं।

- **मोहब्बत के तोहफे के रूप में जमीन दी-** शाही इमाम ने कहा कि मोहम्मद इमरान हैप्पी ने 325 गज जगह, जिसकी कीमत 80 लाख बताई जा रही है, मंदिर कमेटी को तुरंत सौंप दी। हैप्पी ने इसे मोहब्बत के तोहफे के रूप में दिया है। हम उम्मीद करते हैं कि जो मोहब्बत सदियों से चली आ रही है, वह आगे भी ऐसे ही चलती रहेगी। पंजाब की धरती पहली पातशाही गुरु नानक देव जी के नाम से जानी जाती है। श्री गुरु नानक साहिब, जिन्हें हम अपना पीर मानते हैं और जिन्हें आप (सिख) अपना गुरु कहते हैं, उनके दाईं और बाईं ओर एक हिंदू मरदाना और एक बाला जी चलते थे।
- **पंजाब की धरती से मिठास का संदेश-** शाही इमाम ने कहा कि कल भी धूरी में एक पंडित ने मस्जिद के लिए जगह दी। पिछले हफ्ते फतेहगढ़ साहिब के जखवाली में एक सरदार माता ने मस्जिद बनाने के लिए जगह दी है। पंजाब की धरती से मिठास का संदेश पूरे भारत के लिए अमृत है। यह एकता की मिसाल है।

लखनऊ में 6 लोगों को रौंदने वाला स्कूली छात्र गिरफ्तार

- गर्लफ्रेंड के साथ पार्टी से लौट रहा था,6 साल के बच्चे की मौत

लखनऊ (एजेंसी)। लखनऊ में कार से 6 लोगों को रौंदने वाला 12वीं का स्टूडेंट गौरव सिंह गिरफ्तार हो गया है। इस हिट एंड रन का सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया है। इसमें आरोपी गौरव बहुत तेज रफ्तार में कार चलाता हुआ नजर आ रहा है। बताया जाता है कि कार में उसकी गर्लफ्रेंड भी थी। दोनों किसी फेयरवेल पार्टी में शामिल होकर लौट रहे थे। हादसे में नानी के साथ मार्केट गए 6 साल के बच्चे की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि 5 लोगों की हालत नाजुक बनी हुई है। जान गंवाने वाला बच्चा दीक्षांत उन्नाव का रहने वाला है। वह यहां ननिहाल में मां साधना के साथ रहता था। केंद्रीय विद्यालय में पढ़ता था। हादसा गुरुवार शाम करीब 7 बजे बंथरा थाना क्षेत्र में कानपुर रोड स्थित हनुमान मंदिर के पास हुआ। इसका सीसीटीवी शुक्रवार को सामने आया। प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि कार रुकते ही लड़की उतर गई, जबकि छात्र कार लेकर भाग निकला। वहीं, सूचना पर अस्पताल पहुंची मां अपने बेटे के शव से कफन हटाते ही चीख पड़ी। एसीपी कृष्णा नगर रजनीश वर्मा के अनुसार, पुलिस ने कार को ट्रेस कर आरोपी छात्र गौरव सिंह को गिरफ्तार कर लिया और कार भी जब्त कर ली है। गौरव की कार बेकाबू थी। वह अवध कॉलेजिएट में 12वीं में पढ़ता है। उसकी उम्र 21 साल है। कार में उसकी क्लासमेट मौजूद थी।

दीक्षांत, मृतक गौरव सिंह, आरोपी

सत्ता सुख नहीं, हमारे लिए किसानों की सेवा ही सर्वोपरि : केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान

एआईएफ से खेत-खलिहान तक क्रांति, 1 लाख करोड़ रु. से अधिक का इंफ्रास्ट्रक्चर

भोपाल। एमएसपी, दलहन मिशन और प्रमुख दालों की 100 प्रतिशत खरीद की गारंटी से किसानों को सुरक्षा कवच भोपाल। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने आज राज्य सभा में सांसदों के सवालों के जवाबों में साफ कर दिया कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार सत्ता सुख के लिए नहीं, बल्कि किसान, गांव और गरीब के सर्वांगीण विकास के लिए है। उन्होंने जोर देकर कहा कि किसान केवल अन्नदाता नहीं, जीवनदाता है- भगवान तो नहीं, पर भगवान से कम भी नहीं,और इसी सोच के साथ एआईएफ से लेकर एमएसपी, दलहन आत्मनिर्भरता मिशन, पीएम-कुसुम, पराली प्रबंधन और फसल

विविधीकरण जैसी नीतियाँ जमीन पर बदलाव ला रही हैं।

किसान जीवनदाता, कांग्रेस की 50 साल की उपेक्षा बनाम मोदी सरकार का फोकस- केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता सत्ता के स्वर्ण सिंहासन पर आरूढ़ होकर सत्ता सुख के लिए नहीं, बल्कि राष्ट्रीय पुनर्निर्माण, किसानों के कल्याण, दरिद्र नारायण की सेवा और आत्मनिर्भर-विकसित भारत के निर्माण के लिए राजनीति करते हैं। उन्होंने किसान को जीवनदाता बताते हुए कहा कि वह भगवान से कम नहीं है, लेकिन 50 साल तक कांग्रेस की सरकारों ने उसकी मूल समस्याओं की ओर गंभीर ध्यान नहीं दिया, फल-सब्जियाँ और अनाज पैदा होते रहे पर उन्हें सुरक्षित रखने के लिए पर्याप्त व्यवस्था तक नहीं बनी। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने किसानों की इन समस्याओं को पहचाना और यही अंतर आज गांव-गांव दिख रहा है।

पंजाब से तमिलनाडु तक भेदभाव नहीं, विकास की गारंटी

शिवराज सिंह चौहान ने स्पष्ट कहा कि हम सब भारत माँ के लाल हैं, भेदभाव का सवाल ही नहीं उठता और पंजाब की महान जनता को प्रणाम करते हुए आश्वस्त किया कि मोदी सरकार पंजाब की प्रगति और विकास में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ेगी। उन्होंने बताया कि पंजाब में एआईएफ के तहत 32,014 आवेदन आए और प्रारंभिक लक्ष्य 7,425.98 करोड़ के मुकाबले 11,351.54 करोड़ की परियोजनाएँ स्वीकृत की गई, जिनसे बेहतर स्टोरेज, प्रोसेसिंग और मशीनीकरण से 5 प्रतिशत से 15 प्रतिशत तक नुकसान में कमी आई और एक-एक परियोजना से 4 से 9 लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार मिला, जिससे लाखों रोजगार पैदा हुए।

मध्य प्रदेश की बात करते हुए उन्होंने कहा कि कांग्रेस सरकार के समय जहाँ केवल एक फसल होती थी, वहीं अब तीन-तीन फसलें, जिनमें मूंग भी शामिल है, उग रही हैं और सिंचाई व नीतिगत समर्थन के कारण गर्मी के मौसम में 20 लाख मीट्रिक टन तक मूंग उत्पादन हो रहा है, जिसके लिए पारदर्शी खरीदी और 'भावांतर भुगतान' जैसी योजनाएँ लागू हैं। उनका विश्वास है कि इस मिशन के माध्यम से भारत 2030-31 तक दालों में पूरी तरह आत्मनिर्भर हो जाएगा।

एआईएफ से कोल्ड स्टोरेज, वेयरहाउस और मशीनों का नेटवर्क, नुकसान में 15 प्रतिशत तक कमी

कृषि मंत्री शिवराज सिंह ने बताया कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने एग्रीकल्चर इंफ्रास्ट्रक्चर फंड के तहत रू. 1 लाख करोड़ से अधिक की संरचनाएँ बनाने का ऐतिहासिक फैसला किया, ताकि किसानों के उत्पाद को सुरक्षित रखा जा सके। इस योजना के अंतर्गत 44,243 कस्टम हायरिंग सेंटर, 25,854 प्राइमरी प्रोसेसिंग सेंटर, 25,565 फार्म हार्वेस्ट ऑटोमेशन यूनिट, 17,779 वेयरहाउस, 4,201 सॉर्टिंग और ग्रेडिंग यूनिट, स्मार्ट और प्रिसीजन एग्रीकल्चर के लिए 3,549 इंफ्रास्ट्रक्चर और 2,827 कोल्ड स्टोरेज स्थापित किए जा चुके हैं। इन आधुनिक संरचनाओं के कारण फसल, फल और सब्जियों के नुकसान में 5त्न से 15 प्रतिशत तक कमी आई है और किसान अब अपना उत्पाद सुरक्षित रखकर बेहतर दाम हासिल कर पा रहे हैं।

20 हजार से अधिक किसानों ने समर्थन मूल्य पर गेहूँ उपार्जन के लिये कराया पंजीयन : मंत्री श्री राजपूत

भोपाल (नप्र)। रबी विपणन वर्ष 2026-27 में समर्थन मूल्य पर गेहूँ उपार्जन के लिये अब तक 20 हजार 98 किसानों ने पंजीयन करा लिया है। किसान 7 मार्च तक पंजीयन करा सकते हैं। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने किसानों से अपील की है कि निर्धारित समय में पंजीयन अवश्य करा लें। उन्होंने बताया है कि किसान पंजीयन की व्यवस्था को सहज और सुगम बनाया गया है। कुल 3186 पंजीयन केन्द्र बनाये गए हैं। केन्द्र सरकार द्वारा वर्ष 2026-27 के लिये गेहूँ का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) 2585 रूपये प्रति क्विंटल घोषित किया गया है, जो गत वर्ष से 160 रूपये अधिक है।

मंत्री श्री राजपूत ने बताया कि अभी तक इंदौर संभाग में 4084, उज्जैन में 9524, ग्वालियर में 476, चम्बल में 123, जबलपुर में 788, नर्मदापुरम में 900, भोपाल में 3602, रीवा में 68, शहडोल में 83 और सागर में 450 किसानों ने पंजीयन कराया है।

पंजीयन की निःशुल्क व्यवस्था- पंजीयन की निःशुल्क व्यवस्था ग्राम पंचायत और जनपद पंचायत कार्यालयों में स्थापित सुविधा केन्द्र पर, तहसील कार्यालयों में स्थापित सुविधा केन्द्र पर और सहकारी समितियों एवं सहकारी विपणन संस्थाओं द्वारा संचालित पंजीयन केन्द्र पर की गई है।

पंजीयन की सशुल्क व्यवस्था- पंजीयन की सशुल्क व्यवस्था एम.पी. ऑनलाईन कियोस्क, कॉमन सर्विस सेन्टर कियोस्क, लोक सेवा केन्द्र और निजी व्यक्तियों द्वारा संचालित साइबर कैफे पर की गई है।

किसानों को करें एसएमएस- खाद्य मंत्री श्री राजपूत ने बताया है कि विगत रबी एवं खरीफ के पंजीयन में जिन किसानों के मोबाइल नंबर उपलब्ध हैं, उन्हें एसएमएस से सूचित करने के निर्देश दिये गये हैं। गांव में डोंडी पिटवाकर ग्राम पंचायतों के सूचना पटल पर पंजीयन सूचना प्रदर्शित कराने तथा समिति/ मंडी स्तर पर बैनर लगवाने के निर्देश भी दिये गये हैं।

मुख्यमंत्री ने उज्जैन बायपास रेलवे लाइन परियोजना की स्वीकृति के लिए रेल मंत्री वैष्णव का माना आभार

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रेल मंत्रालय द्वारा उज्जैन बायपास लाइन को स्वीकृति प्रदान करने के लिए रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव का आभार माना है। कुल 8.60 किमी की नईखेड़ी-चिंतामन गणेश रेलवे स्टेशन को जोड़ने वाली इस लाइन के प्रारंभ होने से उज्जैन के समीप वैकल्पिक रेल मार्ग उपलब्ध होगा। इससे उज्जैन से ट्रेनों को वापस मोड़ने की आवश्यकता समाप्त हो जाएगी और ट्रेनों में विलंब नहीं होगा। यह व्यवस्था 'सिंहस्थ-2028' के दौरान श्रद्धालुओं के आवागमन को सुगम बनाएगी। उल्लेखनीय है कि भारतीय रेल द्वारा 189.04 करोड़ रुपये की इस परियोजना को स्वीकृति प्रदान की गई है।

मुख्यमंत्री ने भारत कोकिला सरोजिनी नायडू की जयंती पर किया नमन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने स्वतंत्रता सेनानी, भारत कोकिला सरोजिनी नायडू की जयंती पर उनका स्मरण किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सरोजिनी नायडू ने देश की सेवा, साहित्य सृजन और महिला सशक्तिकरण के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। उनके विचार सदैव राष्ट्र सेवा की प्रेरणा देते रहेंगे।

भोपाल के विकास की नई उड़ान

राज्यमंत्री गौर ने किया साढ़े 5 करोड़ से अधिक लागत के विकास कार्यों का भूमिपूजन

भोपाल (नप्र)। पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने शुक्रवार को गोविंदपुरा क्षेत्र में करीब साढ़े 5 करोड़ से अधिक की लागत से बनने वाली दो मुख्य सड़कों का भूमिपूजन किया। राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने कहा कि क्षेत्र के विकास में स्थानीय जनप्रतिनिधि महती भूमिका निभा रहे हैं। हर कार्य को उत्कृष्टता के साथ पूर्ण करने के लिए स्थानीय जनप्रतिनिधि लगातार मेहनत कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि साकेत नगर में विकास के नए आयाम स्थापित हो रहे हैं और ऐसे विकास कार्य निरंतर जारी रहेंगे। राज्यमंत्री गौर ने पंचवटी मार्केट से साकेत नगर एरिया में 1.7 किलोमीटर के रोड निर्माण कार्य का भूमिपूजन किया, इसकी अनुमानित लागत 2 करोड़ 29 लाख रुपए है। उन्होंने वार्ड 62 में पिरिया मोहल्ला संपदा कॉलोनी में 60 मीटर चौड़ाई वाली 1.3 किलोमीटर की सड़क का भी भूमिपूजन किया, जिसकी अनुमानित लागत 3 करोड़ 36 लाख रुपए है। कार्यक्रम में पार्षद श्रीमती ममता विश्वकर्मा, श्रीमती अर्चना परमार, श्रीमती छाया ठाकुर, श्री नीरज सिंह, श्री संतोष ग्वाला, श्री मनोज विश्वकर्मा, श्री नरेंद्र ठाकुर, समाजसेवी श्री करनेल सिंह, श्री लीलाधर मालवीय, श्री सुरेंद्र द्विवेदी, श्री अनिल गुप्ता सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि और रहवासी मौजूद रहे।

राज्य निर्वाचन आयोग का स्थापना दिवस समारोह 16 फरवरी को

पूर्व मुख्य निर्वाचन आयुक्त श्री रावत होंगे मुख्य अतिथि

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश राज्य निर्वाचन आयोग का 32वां स्थापना दिवस समारोह 16 फरवरी को सुबह 11 बजे से आयोजित किया जायेगा। समारोह के मुख्य अतिथि भारत निर्वाचन आयोग के पूर्व मुख्य निर्वाचन आयुक्त श्री ओ.पी. रावत होंगे। श्री रावत वन नेशन-वन इलेक्शन में स्थानीय निर्वाचन की भूमिका विषय पर व्याख्यान देंगे। पूर्व राज्य निर्वाचन आयुक्त श्री आर परशुराम स्थानीय निर्वाचन में सुधार की चुनौतियाँ विषय पर उद्बोधन देंगे। दैनिक भास्कर, स्कूल ऑफ जर्नलिज्म के विभागाध्यक्ष श्री नरेन्द्र कुमार सिंह जमीनी लोकतंत्र में पारदर्शी एवं निष्पक्ष चुनाव विषय पर और एडवोकेट श्री सिद्धार्थ सेठ स्थानीय निर्वाचन में न्यायालयीन सबक विषय पर उद्बोधन देंगे। सचिव राज्य निर्वाचन आयोग श्री दीपक सिंह ने बताया है कि समारोह में आयोग के निर्वाचन साहित्य-ई बुक का विमोचन और प्रेक्षा मोबाइल ऐप का शुभारंभ किया जायेगा। साथ ही स्थानीय निर्वाचन में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारी-कर्मचारी को प्रशस्ति पत्र भी वितरित किये जायेंगे।

दूसरे चरण में 28 फरवरी तक एकमुश्त जमा करने पर सरचार्ज में मिलेगी 90 प्रतिशत तक की छूट

समाधान योजना में अब तक 5 लाख 58 हजार से अधिक उपभोक्ताओं को मिली सरचार्ज में छूट

553 करोड़ 90 लाख मूल राशि हुई जमा, 267 करोड़ 70 लाख का सरचार्ज हुआ माफ

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश सरकार की समाधान योजना 2025-26 का द्वितीय व अंतिम चरण 28 फरवरी तक लागू है। इस दौरान तीन माह से अधिक के बकायादार उपभोक्ताओं को एकमुश्त राशि जमा करने पर 90 प्रतिशत तक सरचार्ज में छूट का लाभ दिया जा रहा है। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने कहा है कि पिछले साल 3 नवंबर से शुरू हुई समाधान योजना 2025-26 में शामिल होकर लाखों बकायादार उपभोक्ताओं ने छूट का लाभ लिया। कंपनी के प्रबंध संचालक श्री ऋषि गर्ग ने उपभोक्ताओं से अपील की है कि तीन माह से अधिक के बकायादार उपभोक्ता योजना के प्रथम चरण में शामिल नहीं हो पाए, वे अब द्वितीय चरण में शामिल होकर अपना बकाया बिल एकमुश्त जमा करके 90 फीसदी तक सरचार्ज माफी का लाभ उठा सकते हैं।

समाधान योजना में 2025-26 में अब तक मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के 5 लाख 58 हजार 598 बकायादार उपभोक्ताओं ने अपना पंजीयन कराकर लाभ लिया है। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के खाते में 553 करोड़ 90 लाख से अधिक की मूल राशि जमा हुई है,

जबकि 267 करोड़ 70 लाख रूपए का सरचार्ज माफ किया गया है।

समाधान योजना 2025-26 के लागू होने से ऐसे अनेक उपभोक्ता हैं, जो बकाया बिल जमा कर रहे हैं और एकमुश्त बकाया राशि जमा करने पर अधिकतम छूट का लाभ ले रहे हैं। यह योजना उन बकायादार उपभोक्ताओं के लिए वरदान बनी है जो सरचार्ज के कारण मूलधन राशि जमा नहीं कर पा रहे थे। अब उन्हें समाधान योजना के द्वितीय चरण में सरचार्ज में 50 से लेकर 90 प्रतिशत तक छूट के साथ एकमुश्त अथवा किस्तों में भुगतान करने का विकल्प मिल रहा है।

समाधान योजना 2025-26: एक नजर में- समाधान योजना 2025-26 का उद्देश्य 3 माह से अधिक अवधि के उपभोक्ताओं को बकाया विलंबित भुगतान के सरचार्ज पर छूट प्रदान करना है। यह योजना जल्दी आएं, एकमुश्त भुगतान कर ज्यादा लाभ पाएं के सिद्धांत पर आधारित है। योजना में द्वितीय और अंतिम चरण 01 फरवरी से शुरू हो चुका है जो कि 28 फरवरी 2026 तक चलेगा। दूसरे चरण में एक मुश्त भुगतान करने पर 70 से 90 फीसदी तथा किस्तों में भुगतान करने पर 50 से 60 फ़ीसदी तक सरचार्ज माफ किया जा रहा है। समाधान योजना 2025-26 का लाभ उठाने के लिए उपभोक्ताओं को म.प्र. मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी भोपाल के लिये portal.mpcz.in पर पंजीयन कराना होगा। कंपनी के 'उपाय' ऐप एवं कॉमन सर्विस सेंटर (सीएससी) तथा एमपी ऑनलाइन पर भी पंजीयन की सुविधा उपलब्ध है। पंजीयन के दौरान अलग-अलग उपभोक्ता श्रेणी के लिए पंजीयन राशि निर्धारित की गई है। घरेलू एवं कृषि उपभोक्ता कुल बकाया राशि का 10 प्रतिशत तथा गैर घरेलू और औद्योगिक उपभोक्ता कुल बकाया राशि का 25 प्रतिशत भुगतान कर पंजीयन कराकर योजना में शामिल होकर लाभ उठा सकते हैं। विस्तृत विवरण तीनों कंपनियों की वेबसाइटों पर भी देखा जा सकता है साथ ही विद्युत वितरण केंद्र से भी योजना के संबंध में जानकारी ले सकते हैं।

गाय का दूध मांगने गई महिला तो किसान ने कहा कि 'आ गई भीख मांगने'

गुस्से में उसने हाथ पकड़कर चबा ली उंगली

रायसेन (नप्र)। मध्यप्रदेश में रायसेन जिले के एक गांव में गुरुवार को एक महिला ने एक किसान से पूजा के लिए गाय का दूध मांगा और जब उसने इनकार कर दिया तो तीखी बहस के बाद कथित तौर पर उसकी उंगली चबा ली। पुलिस के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। इसके बाद किसान को इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया है।

दूध को लेकर विवाद- सलामतपुर थाने के प्रभारी दिनेश रघुवंशी ने बताया कि यह घटना जिला मुख्यालय से करीब 26 किलोमीटर दूर सलामतपुर थानाक्षेत्र के बांसखेड़ा गांव में हुई। उन्होंने बताया कि किसान लक्ष्मण सिंह कोरी ने अपनी शिकायत में कहा कि उनके पड़ोसी महाराज सिंह कोरी की पत्नी माया बाई कोरी सुबह गाय का दूध मांगने के लिए उनके घर आई थी। किसान ने जब दूध देने से मना किया तो दोनों के बीच में बहस हो गई। साथ ही महिला ने कथित तौर पर गाली देना शुरू कर दिया।

उंगली चबा ली- थाना प्रभारी ने कहा कि झगड़े के दौरान महिला ने उसका हाथ पकड़ लिया, उसकी एक उंगली अपने मुंह में डाल ली और उसे चबा लिया। रघुवंशी ने बताया कि घायल किसान की मेडिकल जांच की गई और महिला के खिलाफ मामला दर्ज किया गया।

व्रत की थी महिला- पुलिस के मुताबिक आरोपी महिला माया बाई ने अपने बयान में बताया कि वह हर गुरुवार को व्रत रखती है और पीले वस्त्र धारण कर गाय का दूध, पीले फल-फूल, चने की दाल एवं गुड़ से भगवान विष्णु की पूजा करती है। रायसेन पुलिस ने आरोपी महिला के हवाले से बताया कि वह पूजा के लिए पड़ोसी लक्ष्मण सिंह के पास गाय का थोड़ा सा दूध मांगने गई थी लेकिन उसने गुस्से में मना करते हुए कहा कि 'आ गई भीख मांगने'। रायसेन पुलिस ने बताया कि आरोपी का दावा है कि इसी बात पर से उसे गुस्सा आ गया और उसने दांतों से उसकी उंगली चंबा दी।

एमबीबीएस छात्रा की मौत के बाद थाना घेरा

पुलिस पर धीमी जांच के आरोप, छात्र और परिजन धरने पर बैठे

भोपाल (नप्र)। एमबीबीएस फस्ट ईयर की छात्रा रोशनी कलैश की मौत के मामले में धीमी कार्रवाई से नाराज छात्रा के परिजन और गांधी मेडिकल कॉलेज के छात्रों ने कोहेफिजा थाने का घेराव कर दिया है। प्रदर्शनकारी त्वरित कार्रवाई पर अड़े हुए हैं। थाने के अधिकारियों ने छात्रों को समझाने का प्रयास किया, छात्र जल्द कार्रवाई के आश्वासन के बाद मान भी गए थे, लेकिन कुछ देर बाद फिर से प्रदर्शन शुरू कर दिया।

छात्रों का कहना है कि थाना प्रभारी नहीं पुलिस का बड़ा अधिकारी आकर बात करे। इसे देखते हुए एडिशनल डीसीपी शालिनी दीक्षित मौके पर पहुंच गई हैं और प्रदर्शनकारियों से बात कर रही हैं। बता दें कि 10 फरवरी को गांधी मेडिकल कॉलेज की एमबीबीएस की फस्ट ईयर की छात्रा रोशनी कलैश का शव हॉस्टल में संदिग्ध हालत में मिला था। इस मामले में कहा जा रहा था कि छात्रा ने टॉयलेट क्लीनर पी लिया था।

प्रदर्शनकारियों का आरोप है कि पुलिस मामले में बेहद धीमी जांच कर रही है। जहां बॉडी मिली उस स्थान को भी सील नहीं किया गया। वार्डन और अन्य जिम्मेदारों के बयान भी दर्ज नहीं किए जा सके हैं। प्रदर्शनकारी निष्पक्ष जांच की मांग को लेकर थाने के बाहर धरने पर बैठे हैं। एसीपी अनिल वाजपेयी मौके पर पहुंचे हैं और प्रदर्शनकारियों को समझाने का प्रयास कर रहे हैं।

शव के पास मिली थी एसिड की बॉटल- रोशनी के शव के पास ही एसिड की बॉटल भी मिली थी। रोशनी ने पिछले साल ही अक्टूबर में एमबीबीएस फर्स्ट ईयर में एडमिशन लिया था। जानकारी के मुताबिक रोशनी डे-स्कॉलर थी और कोहेफिजा थाना क्षेत्र में प्राइवेट हॉस्टल में रह रही थी। जब वह सुबह कॉलेज के लिए अपने कमरे से बाहर नहीं निकली, तो साथ पढ़ने वाले स्टूडेंट्स उसे बुलाने के लिए पहुंचे।

प्रदर्शनकारियों का आरोप है कि पुलिस मामले में बेहद धीमी जांच कर रही है। जहां बॉडी मिली उस स्थान को भी सील नहीं किया गया। छात्राओं के मुताबिक रोशनी को कई बार आवाज दी। उसे फोन कॉल किया, लेकिन रोशनी ने कोई जवाब नहीं दिया। इसके बाद पीजी के गार्ड को सूचना दी। गार्ड पहुंचा तो पहले कमरे और फिर बाथरूम का दरवाजा तोड़ा गया, जहां रोशनी पड़ी मिली।

पास में मिली संदिग्ध बॉटल- स्टूडेंट्स ने बताया कि रोशनी के पास एक खाली एसिड की बॉटल भी पड़ी हुई थी। फौरन कॉलेज प्रबंधन को सूचना दी गई। रोशनी को सुबह करीब 8:30 बजे हमीदिया अस्पताल के इमरजेंसी मेडिसिन विभाग ले जाया गया। ड्यूटी पर मौजूद डॉक्टर्स ने जांच के बाद मृत घोषित कर दिया।

दूसरा निकाह कर रहा था पति, पुलिस लेकर पहुंची पत्नी तो रोकनी पड़ी सारी रस्में

छिंदवाड़ा (नप्र)। गुरुवार देर शाम शहर के अमन कॉलोनी इलाके में उस वक्त हड़कंप मच गया, जब एक महिला अपने पति का दूसरा निकाह रुकवाने पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंच गई। पुलिस के हस्तक्षेप के बाद निकाह की चल रही रस्म बीच में ही रोक दी गई।

देहात थाने में लगाई गुहार- पीड़िता को जैसे ही पति की दूसरी शादी की जानकारी मिली, वह सीधे देहात थाना पहुंची। महिला ने पुलिस को बताया कि उसका वैवाहिक विवाद पहले से न्यायालय में विचाराधीन है और गुजारा भत्ता तक तय हो चुका है। इसके बावजूद पति दूसरी शादी कर रहा है। शिकायत मिलते ही पुलिस टीम महिला को साथ लेकर अमन कॉलोनी स्थित घर पहुंची।

पुलिस के पहुंचते ही रुकी रस्म- मौके पर निकाह की तैयारियां चल रही थीं और बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे। पुलिस ने स्थिति को संभालते हुए रस्म रुकवा दी। कुछ देर के लिए माहौल तनावपूर्ण रहा, लेकिन पुलिस ने भीड़ को नियंत्रित कर हालात काबू में किए।

दहेज प्रताड़ना और मारपीट के आरोप- महिला ने पति और ससुराल पक्ष पर दहेज की मांग, मारपीट और जान से मारने की धमकी के आरोप लगाए हैं। उसका कहना है कि शादी के बाद से ही उस पर दहेज लाने का दबाव बनाया गया। मांग पूरी न होने पर उसे प्रताड़ित किया गया और मारपीट में उसके चेहरे पर टांके तक लगाने पड़े। बाद में उसे मायके भेज दिया गया। महिला ने अपने ससुर शेर खान पर भी गंभीर आरोप लगाए हैं। उसका कहना है कि परिवार के भीतर ही एक अन्य लड़की से निकाह कराया जा रहा था।

'तीन तलाक' की धमकी का आरोप- पीड़िता का आरोप है कि मौके पर पहुंचने पर पति ने उसे तीन तलाक देने की धमकी दी। घटना के बाद महिला ने देहात थाने में लिखित शिकायत दी है। पुलिस का कहना है कि दहेज प्रताड़ना, मारपीट और धमकी के आरोपों की जांच की जा रही है। तथ्यों के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

30 फीट गहरे तालाब में गिरी कार...3 बारातियों की मौत

विदिशा (नप्र)। मध्यप्रदेश के विदिशा में गुरुवार देर रात बारातियों से भरी तेज रफ्तार टवेरा कार सूखे तालाब में जा गिरी। हादसे में 3 बारातियों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि 7 लोग घायल हैं। घायलों को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। मामला कोतवाली थाना क्षेत्र का है। जानकारी के मुताबिक गैरतगंज से जाफरखेड़ी निवासी दशरथ सिंह के यहां बारात आ रही थी। टवेरा कार में कुल 10 लोग सवार थे। गाड़ी तेज रफ्तार में थी। अंधेरा होने के कारण ड्राइवर ने नियंत्रण खो दिया। कार सड़क से सीधे 30 फीट गहरे सूखे तालाब में जा गिरी। हादसे में 35 वर्षीय राजेश लोधी, 30 वर्षीय सोनू लोधी (ड्राइवर) और 35 वर्षीय चंद्रशेखर की जान गई है। वहीं घायलों में अशोक लोधी (25) का बायां हाथ फ्रैक्चर हुआ है। राज बोधी (14) के पेट में गंभीर चोट आई है। बृजेश लोधी (27) और सुदीप लोधी (20) को सीने में चोटें लगी हैं।

संपादकीय

सवाल नीयत का है..

बेशक समाज में आज सहिष्णुता अपने निचले स्तर पर है, फिर भी किसी समुदाय अथवा जाति को टारगेट कर अपना व्यावसायिक साधना कहीं से सही नहीं ठहराया जा सकता। क्योंकि सवाल नीयत का है। बॉलीवुड निर्माता नीरज पांडे की नई फिल्म 'घूसखोर पंडत' के विवादित टाइटल पर सुप्रीम कोर्ट ने निर्माता, लेखक को जो फटकार लगाई है, वह इस मायने में सही है कि जो किया गया है, वह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता भर नहीं है, उसका वास्तविक मकसद कुछ और है। इस फिल्म के नाम को लेकर देश में कई जगह ब्राह्मणों संगठनों ने प्रदर्शन किया था। उनका कहना है कि पंडत शब्द का सीधा सम्बन्ध ब्राह्मणों से है और नर्माता ने उन्हें घूसखोर बताकर सभी ब्राह्मणों का अपमान किया है। हालांकि पंडत अथवा पंडित शब्द एकमात्र अर्थ ब्राह्मण नहीं है, यह शब्द किसी भी ज्ञानी अथवा विशारद के लिए भी प्रयुक्त होता है, लेकिन आम बोलचाल में पंडित से अर्थ ब्राह्मणों से ही लिया जाता है। शीर्ष अदालत फिल्म के ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर रिलीज पर रोक लगाने की मांग वाली याचिका पर सुनवाई कर रही थी। मामले की अगली

सुनवाई अब 19 फरवरी को होगी। कोर्ट ने इस मामले में दायर जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए फिल्म निर्माता को इसका टाइटल तुरंत बदलने के लिए कहा। सुप्रीम कोर्ट में यह जनहित याचिका भारत ब्राह्मण समाज के राष्ट्रीय संगठन सचिव अतुल मिश्रा ने दायर की है। याचिका में कहा गया है कि फिल्म का शीर्षक और कहानी पहली नजर में आपत्तिजनक और अपमानजनक है, जो ब्राह्मण समुदाय को बदनाम तरीके से प्रस्तुत करती है। इसमें ' पंडत' जैसे जाति और धर्म से जुड़े शब्द को 'घूसखोर' (रिश्वतखोर) जैसे नैतिक भ्रष्टाचार दर्शाने वाले शब्द के साथ जोड़ने पर आपत्ति जताई गई है। सर्वोच्च अदालत ने कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर समाज के किसी वर्ग को बदनाम नहीं किया जा सकता। जस्टिस बी. वी. नागरत्ना और जस्टिस उज्ज्वल भुइयां की बेंच ने दो टूक कहा कि 'आप ऐसे टाइटल से किसी समाज के वर्ग को बदनाम नहीं कर सकते। बेंच ने सुनवाई के दौरान केंद्र सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड और फिल्म निर्माता नीरज पांडे को नोटिस जारी किया है। कोर्ट ने फिल्म निर्माता से कहा कि आप ऐसे शीर्षक का उपयोग कर समाज के किसी वर्ग को क्यों बदनाम करना चाहते हैं? अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता अपनी जगह है, लेकिन इससे किसी को बदनाम करने का लाइसेंस नहीं मिल जाता। यह नैतिकता और सार्वजनिक व्यवस्था के खिलाफ है। कोर्ट ने साफ कहा कि जब तक आप हमें बदला हुआ शीर्षक नहीं बताते, हम फिल्म रिलीज की अनुमति नहीं देंगे। हमें लगा था कि फिल्म निर्माता, पत्रकार आदि जिम्मेदार लोग होते हैं। कोर्ट ने शपथ पत्र में फिल्म का बदला हुआ 'टाइटल' भी प्रस्तुत करने को कहा है। शीर्ष अदालत ने कहा कि बोलने की आजादी एक चीज है। लेकिन इससे किसी को बदनाम करने का लाइसेंस नहीं मिलता। इस पर निर्माता के वकील ने कहा कि हमने नाम वापस ले लिया है। उधर लखनऊ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर हजरतगंज पुलिस स्टेशन में नेटफ्लिक्स फिल्म 'घूसखोर पंडित' के डायरेक्टर और टीम मेंबर्स के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। शिकायत में आरोप है कि फिल्म के कंटेंट से लोगों की भावनाएं आहत हुई हैं और सामाजिक सद्भाव बिगड़ा है। बहरहाल निर्माता चाहता तो ऐसे विवादित टाइटल से बच सकता था। लेकिन आजकल फिल्म रिलीज होने के पहले कोई न कोई विवाद खड़ा कर उसे हिट बनाने का फार्मूला भी चल निकला है। वरना 1975 में एक फिल्म आई थी 'पोंगा पंडित।' लेकिन उससे किसी की भावनाएं आहत नहीं हुई थीं।

'श्वेत क्रांति' की आड़ में 'जीएम फसलों' का स्वागत?

नजरिया

निलेश देसाई
लेखक कृषि मामलों के जानकार हैं।

ओईसीडी की 2024 की रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिकी किसानों को उनकी सरकार से +7.1 प्रतिशत की सकारात्मक सहायता (पीएसई) मिलती है, जबकि भारतीय किसानों के लिए यह आंकड़ा -14.5 प्रतिशत (नकारात्मक) है। इसका अर्थ है कि अमेरिकी किसान भारी सरकारी सब्सिडी के कारण अपने उत्पादों को वैश्विक बाजार में कौड़ियों के भाव बेच सकते हैं। जब अमेरिका का यह सब्सिडी वाला 'सस्ता चारा' भारतीय बाजार में आएगा, तो महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और राजस्थान के उन लाखों सोयाबीन और मक्का उत्पादकों का क्या होगा, जिनकी फसल पहले ही एमएसपी से 25-26 प्रतिशत नीचे बिक रही है?

हाल ही में भारत और अमेरिका के बीच हुए 'अंतरिम व्यापार समझौते' को लेकर देश के नीतिगत गलियारों में उत्साह का माहौल है। 2026 तक द्विपक्षीय व्यापार को 500 अरब डॉलर तक ले जाने का लक्ष्य निश्चित रूप से महत्वाकांक्षी है। लेकिन, इस आर्थिक चमक-धमक के पीछे भारतीय कृषि क्षेत्र की एक गहरी चिंता छिपी है। आशा-किसान स्वराज जैसे संगठनों और कृषि विशेषज्ञों ने इस समझौते के उन प्रावधानों पर सवाल उठाए हैं जो भारत की खाद्य संप्रभुता और करोड़ों किसानों की आजीविका को सीधे प्रभावित कर सकते हैं। सवाल यह है कि क्या अमेरिका के साथ व्यापारिक संतुलन बनाने के चक्कर में हम अपने कृषि क्षेत्र की 'रेड लाइन्स' को धुंधला कर रहे हैं?

इस समझौते का सबसे विवादास्पद पहलू है 'डिस्टिलर्स ड्राइड ग्रेंस विद सोल्यूबल्स' (डीडीजीएस), लाल सोरघम और सोयाबीन तेल के आयात की अनुमति। पहली नज़र में यह एक सामान्य व्यापारिक लेन-देन लग सकता है, लेकिन गहराई से देखने पर यह भारतीय किसानों के लिए एक 'अन्यायपूर्ण युद्ध' जैसा है।

ओईसीडी की 2024 की रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिकी किसानों को उनकी सरकार से +7.1 प्रतिशत की सकारात्मक सहायता (पीएसई) मिलती है, जबकि भारतीय किसानों के लिए यह आंकड़ा -14.5 प्रतिशत (नकारात्मक) है। इसका अर्थ है कि अमेरिकी किसान भारी सरकारी सब्सिडी के कारण अपने उत्पादों को वैश्विक बाजार में कौड़ियों के भाव बेच सकते हैं। जब अमेरिका का यह सब्सिडी वाला 'सस्ता चारा' भारतीय बाजार में आएगा, तो महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और राजस्थान के उन लाखों सोयाबीन और मक्का उत्पादकों का क्या होगा, जिनकी फसल पहले ही एमएसपी से 25-26 प्रतिशत नीचे बिक रही है?

इस पूरे विवाद का सबसे तकनीकी और स्वास्थ्य से जुड़ा मुद्दा 'जेनेटिकली मॉडिफाइड' (जीएम) फसलों का है। अमेरिका में उत्पादित होने वाला लगभग 90-95 प्रतिशत मक्का और सोयाबीन जीएम आधारित है। भारत ने अब तक अपनी खाद्य सुरक्षा और जैव-विविधता के मद्देनजर जीएम खाद्य फसलों को अनुमति नहीं दी है।

लेकिन, इस व्यापार समझौते की शब्दावली में 'गैर-टैरिफ बाधाओं को दूर करने' की बात कही गई है। यह सीधे तौर पर भारत के उन सख्त नियमों पर हमला है जो जीएम आयात के लिए 'नॉन-जीएम ओरिजिन' सर्टिफिकेट की मांग करते हैं। सरकार का यह तर्क कि 'प्रोसेसिंग के बाद जीएम का प्रभाव खत्म हो जाता है,' वैज्ञानिक रूप से संदिग्ध है। अंतरराष्ट्रीय शोध बताते हैं कि जीएम डीएनए के अंश प्रसंस्कृत तेलों और पशु आहार में बने रह सकते हैं। यदि हमारे मवेशी जीएम-आधारित चारा (डीडीजीएस) खाएंगे, तो वही जीएम तत्व दूध और मांस के माध्यम से सीधे भारतीय नागरिकों की थाली तक पहुंचेंगे। यह बिना किसी लेबलिंग या सुरक्षा जांच के भारत में 'जीएम भोजन' को वैध बनाने जैसा है।

देश की सबसे बड़ी डेयरी सहकारी संस्था 'अमूल' (जीसीएमएफ) ने इस समझौते का स्वागत किया है। अमूल के लिए यह एक रणनीतिक जीत है क्योंकि वह अब अमेरिका में स्थानीय स्तर पर उत्पादन कर रही है और कोस्टको जैसे बड़े स्टोरों में अपनी जगह बना रही है। लेकिन यहाँ एक बड़ा 'हितों का टकराव' उभरता है।

अमूल को अपने ग्लोबल विस्तार के लिए सस्ता कच्चा माल चाहिए। अमेरिकी चारा और इनपुट्स

सस्ते हैं, जिससे अमूल का 'प्रॉफिट मार्जिन' तो बढ़ेगा, लेकिन वह उन भारतीय किसानों की कीमत पर होगा जो अमूल को पारंपरिक चारा और मक्का सप्लाई करते थे। एक सहकारी संस्था का लक्ष्य अपने सदस्य किसानों का कल्याण होता है, लेकिन जब वह एक वैश्विक कॉरपोरेट की तरह व्यवहार करने लगे, तो छोटे किसानों की सुरक्षा का कवच कमजोर होने लगता है।

आज का भारतीय उपभोक्ता दूध में यूरिया और डिटर्जेंट जैसी मिलावट को लेकर तो जागरूक है, लेकिन वह उस 'साइलेंट एडल्टरेशन' (परोक्ष मिलावट) से अनजान है जो पशुओं के चारे के माध्यम से आ रही है। अगर दूध देने वाले पशुओं को जेनेटिकली मॉडिफाइड और कीटनाशकों से लदा चारा खिलाया जाएगा, तो दूध की शुद्धता केवल एक कागजी दावा बनकर रह जाएगी। क्या भारतीय उपभोक्ताओं को यह जानने का हक नहीं है कि वे जिस दूध या घी का सेवन कर रहे हैं, उसका मूल स्रोत क्या है? कृषि केवल एक व्यापारिक वस्तु नहीं है; यह भारत के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा का मुद्दा है। अगर हम आज सस्ते आयात के लालच में अपने मक्का, सोयाबीन और कपास किसानों को हतोत्साहित करते हैं, तो कल हम अपनी खाद्य जरूरतों के लिए पूरी तरह से अंतरराष्ट्रीय बाजार (विशेषकर अमेरिका) पर निर्भर हो जाएंगे। इतिहास गवाह है कि खाद्य निर्भरता अंततः राजनीतिक निर्भरता में बदल जाती है।

कपास के किसानों का उदाहरण हमारे सामने है, जहाँ आयात शुल्क हटाने से घरेलू कीमतों में भारी गिरावट आई और किसान संकट में घिर गए। सोयाबीन और मक्का के साथ भी यही दोहराए जाने की आशंका है। भारत-अमेरिका व्यापार समझौता आर्थिक विकास के द्वार खोल सकता है, लेकिन यह द्वार भारतीय किसानों की कब्र पर नहीं खुलना चाहिए। सरकार को यह सुनिश्चित करना होगा कि 'कृषि सुरक्षा' का दावा केवल प्रेस कॉन्फ्रेंस तक सीमित न रहे।

हमें चाहिए-

सख्त लेबलिंग कानूनः यदि जीएम-आधारित उत्पाद आयात होते हैं, तो उन पर स्पष्ट लेबल होना चाहिए।

समान अवसर (लेवल प्लेइंग फील्ड): जब तक भारतीय किसानों को अमेरिकी किसानों के बराबर सब्सिडी या समर्थन नहीं मिलता, तब तक शुल्क मुक्त आयात को रोकना चाहिए।

वैज्ञानिक पारदर्शिताः जीएम चारे के दूध और मानव स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दीर्घकालिक प्रभावों की स्वतंत्र जांच होनी चाहिए।

अंततः, विकास वही है जो अंतिम पायदान पर खड़े किसान को खुशहाल बनाए। अगर व्यापारिक समझौते हमारी खेती को कमजोर करते हैं, तो ऐसे समझौतों पर पुनर्विचार करना अनिवार्य है।

हिटलर की प्रेमिका और मौत तक साझेदारी

वेलेंटाइन डे विशेष

डॉ. ब्रह्मदीप अलूने
लेखक अंतर्राष्ट्रीय मामलों के जानकार हैं।

प्रेम सचमुच कमाल होता है, उसकी अभिव्यक्ति, भावनाएं और समर्पण इंसान को असाधारण बना देते हैं। लेकिन यदि प्रेम,किसी तानाशाह से हो जाएं तो वह गहरी दुविधा पैदा करता है। एक ओर निजी संबंध की कोमलता होती है,तो दूसरी ओर उस व्यक्ति के कठोर और अमानवीय कर्मों की कठोर सच्चाई। प्रेम कभी-कभी इंसान को अंधा भी कर देता है,जहां वह प्रिय व्यक्ति के दोषों को अनदेखा कर देता है। ऐसे में प्रेम भावनात्मक निष्ठा बन जाता है,पर इतिहास और नैतिकता उससे अलग प्रश्न पूछते रहते हैं।

एडॉल्फ हिटलर की निर्ममता आधुनिक इतिहास के सबसे भयावह अध्यायों में गिनी जाती है। उनकी नाज़ी विचारधारा नस्लीय श्रेष्ठता,यहूदी-विरोध और आक्रामक राष्ट्रवाद पर आधारित थी। सत्ता में आने के बाद उन्होंने लोकतांत्रिक संस्थाओं को नष्ट कर एक पूर्ण तानाशाही स्थापित की, जहां असहमति को कठोर दमन से कुचल दिया जाता था। हिटलर की नीतियों का सबसे क्रूर परिणाम होलोकॉस्ट था,जिसमें लगभग साठ लाख यहूदियों सहित लाखों बीमार, विकलांग,राजनीतिक विरोधियों और अन्य समुदायों की व्यवस्थित हत्या की गई। कंसंट्रेशन कैंप और गैस चैंबर मानव इतिहास की अमानवीयता के प्रतीक बन गए। इसके अलावा,उसकी विस्तारवादी नीति ने द्वितीय विश्व युद्ध को जन्म दिया,जिसमें करोड़ों लोग मारे गए और यूरोप का बड़ा हिस्सा तबाह हो गया। हिटलर ने अपने राष्ट्रवादी उद्देश्यों के लिए पूरी मानवता को युद्ध और विनाश की आग में झोंक दिया। हिटलर की निर्ममता केवल युद्ध या हत्या तक सीमित नहीं थी,बल्कि वह एक ऐसी विचारधारा का प्रतिनिधित्व करती थी जिसने मानव समानता और करुणा के मूल सिद्धांतों को नकार दिया। उनका शासन इस बात की चेतावनी है कि कट्टरता और घृणा जब सत्ता के साथ जुड़ती है तो उसका परिणाम कितना विनाशकारी हो सकता है।

हिटलर निस्संदेह इतिहास का एक भयावह तानाशाह था, उसकी नीतियों और निर्णयों ने लाखों निर्दोष लोगों की जान ली। वह क्रूरता,नस्लवाद और विनाशकारी विचारधारा का प्रतीक बन गया। ऐसे व्यक्ति से क्या कोई प्रेम कर सकता है? क्या कोई उसे अपनी जान से भी अधिक चाह सकता है? यह प्रश्न हमें प्रेम की जटिलता और मानवीय मनोविज्ञान की गहराइयों तक ले जाता है। एडॉल्फ हिटलर का अंत द्वितीय विश्व युद्ध के अंतिम दिनों में हुआ,जब नाज़ी जर्मनी पूरी तरह पराजय की कगार पर खड़ा था। अप्रैल 1945 तक सोवियत रेड आर्मी बर्लिन की सीमाओं में प्रवेश कर चुकी थी। मित्र राष्ट्र पश्चिम से और सोवियत सेना पूर्व से जर्मनी को घेर चुकी थी। हिटलर ने बर्लिन में राइख चांसलरी के नीचे बने भूमिगत बंकर,फ़्यूररबंकर में शरण ली थी। जैसे-जैसे जर्मन सेना हारती गई,हिटलर की मानसिक और शारीरिक स्थिति भी बिगड़ती गई। उन्होंने अंतिम दिनों में अपने जनरलों पर विश्वास खो दिया और कई को विश्वासघात का दोषी ठहराया। 29 अप्रैल 1945 को उन्होंने अपनी लंबे समय की साथी ईवा ब्राउन से विवाह किया। उसी रात उन्होंने अपना राजनीतिक वसीयतनामा तैयार कराया,जिसमें उन्होंने जर्मनी के भविष्य के नेतृत्व की घोषणा की।

एडॉल्फ हिटलर के निजी जीवन का सबसे चर्चित और रहस्यमय अध्याय उनकी साथी ईवा ब्राउन से जुड़ा है। इतिहास में हिटलर को एक क्रूर तानाशाह,नाज़ी विचारधारा के प्रतीक और द्वितीय विश्व युद्ध के प्रमुख सूत्रधार के रूप में याद किया जाता है,लेकिन उसके निजी जीवन का यह पहलू लंबे समय तक परदे के पीछे रहा। ईवा ब्राउन का जीवन इस बात का उदाहरण है कि किस प्रकार एक तानाशाही सत्ता के केंद्र में मौजूद व्यक्ति की निजी दुनिया भी राजनीतिक रणनीति,छवि-निर्माण और अंततः विनाश से प्रभावित होती है। ईवा ब्राउन का जन्म 6 फरवरी 1912 को म्यूनिख, जर्मनी में हुआ था। वह एक मध्यमवर्गीय कैथोलिक परिवार से थीं। किशोरावस्था में उन्होंने एक फोटोग्राफर हाइनरिख हॉफमान के स्टूडियो में सहायक के रूप में काम करना शुरू किया। यहीं 1929 में उनकी मुलाकात एडॉल्फ हिटलर से हुई,जो उस समय नाज़ी पार्टी के उभरते हुए नेता थे। मुलाकात के समय हिटलर 40 वर्ष के थे और ईवा मात्र 17 वर्ष की। धीरे-धीरे यह परिचय निजी संबंध में बदल गया। हालांकि हिटलर ने इस संबंध को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया,लेकिन समय के साथ ईवा उनके निजी जीवन का स्थायी हिस्सा बन गई।

नाज़ी प्रचार तंत्र ने हिटलर की छवि एक ऐसे त्यागी नेता के रूप में गढ़ी थी जो पूरी तरह राष्ट्र को समर्पित है और जिसका कोई पारिवारिक जीवन नहीं है। इस छवि को बनाए

रखने के लिए ईवा ब्राउन को सार्वजनिक जीवन से दूर रखा गया। वे आधिकारिक कार्यक्रमों में शायद ही कभी दिखाई देती थीं। ईवा का अधिकांश समय बवेरिया के आल्प्स पर्वतों में स्थित हिटलर के निवास बर्घोफ में बीतता था। यहाँ वे अपेक्षाकृत आरामदायक जीवन जीती थी,फिल्में देखना, खेलकूद,फोटोग्राफी और मित्रों के साथ समय बिताना उनकी दिनचर्या का हिस्सा था। उन्होंने कई निजी रंगीन फिल्में भी शूट की,जिनसे उस दौर के नाज़ी नेतृत्व का अनौपचारिक पक्ष सामने आता है। फिर भी,उनका जीवन पूरी तरह स्वतंत्र नहीं था। वे राजनीतिक निर्णयों से दूर रखी गईं और हिटलर के निकट होने के बावजूद सत्ता संरचना में उनकी कोई औपचारिक भूमिका नहीं थी।

ईवा ब्राउन और हिटलर का संबंध इतिहास के सबसे विवादित प्रसंगों में से एक है,फिर भी मानवीय दृष्टि से देखें तो इसमें गहरे भावनात्मक समर्पण का तत्व स्पष्ट दिखाई देता है। हिटलर का व्यक्तित्व अत्यंत नियंत्रक और आत्मकेंद्रित था, और ईवा को लंबे समय तक सार्वजनिक पहचान नहीं मिली। वे सत्ता के केंद्र के निकट होते हुए भी छाया में रहीं। यह स्थिति किसी भी व्यक्ति को भीतर से तोड़ सकती थी,किंतु ईवा का भावनात्मक जुड़ाव कम नहीं हुआ। उन्होंने अपने संबंध को प्रदर्शन या प्रतिष्ठा का माध्यम नहीं बनाया,बल्कि निजी निष्ठा के रूप में जिया। जब युद्ध अपने अंतिम और भयावह चरण में था,तब भी उन्होंने सुरक्षित जीवन चुनने के बजाय हिटलर के साथ रहना स्वीकार किया। बर्लिन के बंकर में, विनाश और पराजय के बीच, 29 अप्रैल 1945 को विवाह करना और अगले ही दिन साथ मृत्यु को स्वीकार करना,यह उनके दृष्टिकोण से प्रेम की चरम अभिव्यक्ति थी। इतिहास की कठोर पृष्ठभूमि से अलग, यह प्रसंग इस रूप में भी देखा जा सकता है कि किसी व्यक्ति के प्रति अडिग निष्ठा और भावनात्मक समर्पण कितनी दूर तक जा सकता है। यह प्रेम की जटिल, किंतु गहन मानवीय अभिव्यक्ति का उदाहरण है।

द्वितीय विश्व युद्ध के अंतिम चरण में जब जर्मनी की हार लगभग तय हो चुकी थी, सोवियत सेना बर्लिन की ओर बढ़ रही थी। अप्रैल 1945 में हिटलर ने बर्लिन के फ़्यूररबंकर में शरण ली। इस समय ईवा ब्राउन ने म्यूनिख छोड़कर बर्लिन जाने और हिटलर के साथ रहने का निर्णय लिया। यह निर्णय उनके जीवन का सबसे निर्णायक क्षण था। कई लोगों ने उन्हें बर्लिन न जाने की सलाह दी, लेकिन उन्होंने हिटलर के साथ अंत तक रहने का निश्चय किया। यह निर्णय प्रेम, निष्ठा से प्रेरित था। 29 अप्रैल 1945 को, जब जर्मनी पूरी तरह पराजय की कगार पर था, हिटलर और ईवा ब्राउन ने बंकर में एक छोटे से नागरिक समारोह में विवाह किया। यह विवाह अत्यंत सादगीपूर्ण और औपचारिक था। विवाह के दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर किए गए और कुछ विश्वस्त सहयोगी उपस्थित रहे। विवाह के अगले ही दिन, 30 अप्रैल 1945 को, दोनों ने आत्महत्या कर ली। हिटलर ने अपने सिर में गोली मारी,जबकि ईवा ब्राउन ने सायनाइड कैप्सूल लिया। उनकी इच्छा के अनुसार,उनके शवों को बंकर के बाहर ले जाकर पेट्रोल से जलाया गया जिससे वे सोवियत सेना के हाथ न लगें। हिटलर और ईवा ब्राउन आज इस दुनिया में नहीं है,इतिहास ने हिटलर को उसके विनाशकारी कर्मों के आधार पर कठोरता से परखा है। फिर भी ईवा का व्यक्तिगत प्रेम एक जटिल मानवीय प्रश्न छोड़ जाता है। उनका साथ अंत तक निभाना यह दिखाता है कि प्रेम कभी-कभी परिस्थितियों,भय और पतन के क्षणों में भी अडिग रह सकता है।

मजे ट्रैफिक जाम के

निर्मल आनंद

रमेश रंजन त्रिपाठी
लेखक स्तंभकार हैं।

छुट्टियाँ मनाने का हमारा तरीका सबसे निराला है। छुट्टी यानी घर में रहने और खाना बनाने से मुक्ति। कहीं न जाएं तो हॉलिडे की फीलिंग ही नहीं आती। घर की चहारदीवारी में ऊब महसूस होती है, सो खिड़की, दरवाजे और दीवारों के बंधन तोड़कर निकल पड़ते हैं और कुछ नहीं तो खुले आसमान के नीचे सड़क पर लगे वाहनों के जाम का आनंद लेने लगते हैं, जैसे किसी मेले में पहुंच गए हों। ट्रैफिक जाम में कमाल का नजारा होता है, आगे गाड़ियाँ, पीछे गाड़ियाँ, नीचे सड़क और ऊपर नीला आकाश। गाड़ी को, ड्राइवर को और सवारियों को आराम। सोने में सुहागा यह कि ऐसे रुकने और घंटों गाड़ी पार्क रखने की सुविधा के लिए कोई रकम नहीं चुकानी पड़ती। गाड़ी से बाहर निकलकर हाथ-पांव सीधे करने का मौका भी पा सकते हैं। अकेलापन महसूस नहीं होता, गाड़ियों और सवारियों का जमघट लगा होता है। छोटे-बड़े तरह-तरह के वाहन, भाँति-भाँति के लोगों की भीड़ और साथ में एग्जॉस्ट पाइप से निकलते गरमागरम धुएँ के महकते बादलों के बीच इंजन और हॉर्न के संगीत का मजा। बँधी-बँधाई दिनचर्या से बोर हुए लोग ट्रेफिक जाम के कारण और उसके निवारण को लेकर सक्रिय हो उठते हैं और अपनी मैनेजमेंट स्किल का प्रदर्शन करने लगते हैं। बच्चे अपनी क्रंदन, जिद और बचकानी क्षमताओं का सार्वजनिक प्रदर्शन शुरू कर देते है। महिलाओं को बड़बड़ाने और कोसने के लिए नया बहाना मिल जाता है। सड़क पर लगनेवाला जाम मिनटों, घंटों या दिनों के हिसाब से छोटा, मझोला या बड़ा हो सकता है। यह व्यक्ति की खुशक़िस्मती पर निर्भर करता है कि उसे किस तरह के जाम ने अपने साथ एन्जॉय करने का मौका दिया !

घंटों जाम में फंसे लोगों को अध्यात्म, दर्शनशास्त्र के साथ व्यावहारिक ज्ञान की अद्भुत प्राप्ति होती है। सबसे पहले उन्हें ऊपरवाला याद आने लगता है। दिल की गहराइयों से 'हे भगवान' निकलता है। मन के रेडियो पर भाग्य, साइत, शकुन-अपशकुन की धुन झंकार बीट्स के साथ बजने लगती है। दिमाग के स्क्रीन पर कई वीडियो क्लिप रिवाइंड होने लगती हैं, चलते समय किसी ने छींका तो नहीं था, दिशाशूल तो नहीं है या किसी बिल्ली ने रास्ता तो नहीं काटा था? भेदभाव भुलाकर सब एक-दूसरे के लिए सहानुभूति महसूस करते हुए जाम खुलवाने के लिए टीम भावना के महत्व का ज्ञान प्राप्त करते हैं। जिंदगी में कभी भी अप्रत्याशित घटना के लिए तैयार रहना सीखते हैं। बिना खाना-पानी के काम चलाने की क्षमता का आकलन हो जाता है। धैर्य के अलावा संकट के समय मोबाइल की बैटरी कितना साथ देती है, परीक्षा हो जाती है। महिलाएं यह जान जाती हैं कि उनका मेकअप कितने घंटे टिक सकता है! जैसी मिले वैसी चाय पीते या कैसा भी समोसा और कचौरी खाते हुए 'भूख न देखे जूठा भात' मुहावरे का वास्तविक अर्थ समझ में आ जाता है। इलेक्ट्रिक व्हीकल वालों को एक-एक मिनट की कीमत का अंदाजा लगने लगता है। लाखों की कार और हजारों की गाड़ी वाले सबके पांव समान धरातल पर टिक जाते हैं। फिर भी घमंड करने के लिए आगे फंसे गाड़ीवाले पीछे की गाड़ियों से मीटरों आगे होने को पैमाना बना सकते हैं। भारी-भरकम ट्रकों का बड़प्पन और गंभीरता प्रशंसा करने लायक होती है। वे सबसे ज्यादा निश्चिंत नजर आते हैं, कोई चीख-पुकार नहीं मचाते। हफ्तों महीनों चल-चलकर वे विरागी हो जाते हैं इसीलिए शांत भाव से जाम के सुख और खुली सड़क के दुख दोनों में निस्पृह बने रहते हैं। ट्रैफ़िक जाम हमें गीता के ज्ञान का मर्म समझाता है कि केवल घर से निकलना हमारे हाथ में है, मंजिल पर पहुंचना हमारे अधिकार में नहीं है।

रोड का जाम खुलने के आनंद का वर्णन नहीं किया जा सकता। जैसे भूखे को पकवान या प्यासे को शर्बत मिल जाए, कुछ ऐसा ही हाल होता है सबका। रास्ता खुलते ही बाहर घूम रहे लोग गाड़ी की ओर ऐसे लपकते हैं जैसे क्रिकेट का खिलाड़ी कैच पकड़ने दौड़ रहा हो। वाहन के अंदर ऊंघ रहे लोग चौंक कर ऐसे उठ जाते हैं जैसे बुरा सपना देख लिया हो। इस मजेदार अनुभव के लिए जाम में फँसना पड़ता है। जाम में शिरकत करनेवालों के पास दोस्तों, रिश्तेदारों और आनेवाली पीढ़ियों को सुनाने के लिए भारी मात्रा में मसाला इकट्ठा हो जाता है। यायावरों की महफिल में लोग दो गुटों में बंट जाते हैं, एक जिन्होंने जाम में फंसने का लुत्फ उठाया और दूसरे जो इस सुख से वंचित हों। पहली श्रेणी के लोग खुद को सुपीरियर मानें तो आश्चर्य कैसा? और, उन सफर करनेवालों की तो बात ही क्या जो कई बार जाम का आनंद ले चुके हैं !

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

और सोहनी ही रोज क्यों आती थी?

व्यंग्य

मुकेश नेमा
लेखक एमपी के प्रशासनिक अधिकारी हैं।

आज सोहनी महिवाल को श्रद्धांजलि दी जाएगी। इज़्ज़त बेग बुखारा का एक अमीर सौदागर था। व्यापार के सिलसिले में पंजाब आया। और बाजार मे उसकी मुलाकात सोहनी से हुई। इज़्ज़त बेग था बाँका नौजवान। कुम्हार की बेटी सोहनी थी सलोनी सुंदरी। दोनों एक-दूसरे को पसंद आ गए। इश्क ने इज्जत बेग को नाकारा किया। उसका व्यापार एक तरफ धरा रह गया। दूसरी प्रेम कहानियों की ही तरह इस कहानी में भी भैंसों ने प्रेम पगे जोड़े की मदद की। सोहनी के करीब रहने के चक्कर में इज़्ज़त बेग सोहनी के बाप की भैंसें चराने लगा। तब चरवाहों को महिवाल कहा जाता था। ये प्रेमी जोड़ा छुप-छुप कर मिलने लगा। दुनिया को खबर हुई तो इज्जत बैग से इज्जत बचाने के चक्कर मे सोहनी के बाप ने उसकी शादी नदी पार गांव के एक कुम्हार से ज़बरदस्ती कर दी।

सोहनी किसी और की बीबी हुई। पर न सोहनी मानी न महिवाल माना। महिवाल नदी के दूसरी किनारे पर झोपड़ी बना कर रहने लगा। सोहनी हर रात एक पक्के घड़े की मदद से उफनती हुई चिनाब नदी तैरकर महिवाल से मिलने आती और सुबह होने के पहले ससुराल लौट जाती। एक रात सोहनी की ननद ने उसे ऐसा करते देख लिया। ननद को गुस्सा आया। उसने पक्के घड़े की जगह कच्चा घड़ा रख दिया। अगली रात सोहनी ने वह कच्चा घड़ा उठाया और नदी में उतर गई। बीच लहरों में जाकर वह कच्चा घड़ा गल गया। सोहनी डूबने लगी। उसकी चीखें सुनकर महिवाल उसे बचाने के लिए तूफानी नदी में कूद गया।महिवाल भी तैरना नहीं जानता था। ऐसे मे दोनो एक दूसरे को ले डूबे। इस तरह यह कहानी खत्म हुई और प्रेमियों के मर जाने की वजह से पूरी दुनिया में पसंद की गई।

इस कहानी को पढ़कर हर अक़्लमंद आदमी के दिमाग मे कुछ वाजिब बातें, कुछ जरूरी सवाल आने ही चाहिए। सो मेरे सवाल ये है।

पहली बात तो यह कि अमीर इज़्ज़त बेग को यदि गरीब सोहनी से इश्क हो ही गया था तो उसके बाप के यहाँ भैंस चराने की क्या जरूरत थी ? वो सीधे या अपने बाप के जरिए सोहनी के बाप से बात करता। अपने बिजनेस के टर्नओवर का ब्यौरा पेश करता। यह होता तो सोहनी का बाप यकीनन मान जाता। और न घड़े बदलने की नौबत आती न सोहनी की ननद बदनाम होती।

चलिए ऐसा नही हो सका। पर ये घड़े की मदद से नदी पार करना तो गजब ही बात। एकाध कश्ती का इंतजाम किया जा सकता था। और फिर सोहनी कुम्हार की बेटी। कुम्हार का काम पानी मिट्टी के बिना मुमकिन नही। कुम्हार का नदी किनारे डेरा। नदी किनारे रहने वाली लड़की तैरना न जाने ये बात गले कैसे उतरे? चलो ये भी मान ले कि वो किसी वजह से तैरना नही सीख पाई होगी पर कुम्हार की लड़की कच्चे और पक्के घड़े मे फर्क न कर पाए ये बात गले उतरने जैसी है नही।

और फिर सोहनी ही रोज क्यों आती थी? क्या महिवाल की ये नैतिक ज़िम्मेदारी नहीं बनती थी कि कभी कभी-कभार वो खुद रिस्क उठाए। महिवाल दिन भर बैठे बैठे मख्खी मारने के बजाए यदि तैराकी सीख लेता तो दोनो कुछ साल और जिंदा रह सकते थे।

इस कहानी से ये भी पता चलता है कि महिवाल को सोहनी के अलावा भैंसों मे भी दिलचस्पी थी। फलते फूलते कारोबार को लात मारकर,भैंसों के पीछे पीछे घूमने से कम से कम मुझे तो यही लगता है। ऐसे मे वो सोहनी की शादी के बाद उसके पति की पाली भैसों को नहला धुला कर सोहनी के करीब रहने की जुगत भिडा सकता था और मुमकिन है उसके ऐसा करने से सोहनी की ननद भी प्रसन्न होती।

इस कहानी मे ननद के साथ नाइंसाफी हुई है। इस बेचारी लड़की को ख़ामख़ा विलेन बना दिया गया है। ननदें ऐसी सिचुएशन मे आमतौर पर क्या करती हैं? वो अपनी अम्मा को बताती। भाई के कान भरती। भाभी के बाल पकड़ कर खींचती। घडा बदल कर भाभी को मार डालने से ज्यादा अहिंसक और प्रभावी तरीके अपनाए जा सकते थे। पर ऐसा साफ लगता है कि इस कहानी को लिखने वाला हीरो हीरोइन को केवल इसलिए मार डालना चाहता था ताकि उसकी कहानी हिट हो सके।

खैर। हमे क्या करना है ? हर दूसरी प्रेम कहानी की ही तरह इस कहानी के अमीर हीरो ने अपनी प्रेमिका के घर चाकरी कर अपनी मिट्टी कुटवाई है। दूसरे की बीबी के चक्कर मे अपनी जान गँवाई है। चूँकि मैं अक़्लमंद हूँ सो हमें तो जँची नही ये कहानी। आपको पसंद आई हो तो आप जाने। मुझे आपसे कुछ नही कहना है।

वैलेंटाइन डे

चित्रा माली

लेखक स्तंभकार हैं।

आदर्श इश्क और प्रेम दिवस

समाज-वैज्ञानिक प्रेम के विषय में गहन और व्यापक विचार-विमर्श कर इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि प्रेम की कोई एक सार्वभौमिक परिभाषा नहीं दी जा सकती है। सामाजिक दृष्टि से देखने पर प्रेम अपनी आत्मनिष्ठता के बावजूद वस्तुनिष्ठ संरचनाओं (कास्ट,क्लास, जेंडर,सत्ता,उत्पादन संबंध और बाजार) से भी प्रभावित होता है। समाज-विज्ञान के विकास से पूर्व प्रेम जैसे विषयों पर केवल साहित्य और दर्शन में ही चर्चा होती थी। साहित्य की तमाम विधाओं में प्रेम को सार्वभौम माना जाता था लेकिन समाज - विज्ञान अलग-अलग संस्कृतियों,समाजों,सामाजिक संरचनाओं के चलते प्रेम के एक रूप को स्वीकार नहीं करता है। प्रेम के आधुनिक विमर्श में उसका वर्गीकरण छह श्रेणियों में किया गया है। श्रेणियों के नामकरण प्राचीन यूनानी दर्शन के पदों पर आधारित है। प्रेम की पहली श्रेणी 'इरोज़' है जो काम का यूनानी देवता है।

मनुष्य के मनोभावों में से एक प्रेम है जो मानवीय जीवन का आधारभूत तत्व है। प्रेम विहीन सृष्टि या कहें दुनिया की कल्पना नहीं की जा सकती है। गांधी जी प्रेम के सार्वभौमिक नियम में विश्वास करते थे, वे किसी भी तरह के भेदभाव को नहीं मानते थे। उनके अनुसार प्रेम सृष्टि का नियम है, प्रेम हमेशा देता है, प्रेम स्वयं पीड़ा भोगता है, कभी दोष प्रकट नहीं करता, कभी बदला नहीं लेता। हमारी जनरेशन ने प्रेम के विचार को कई भावानुवादों से जाना समझा है जिसमें आदर, सम्मान, देखभाल, विश्वास, दोस्ती और प्रतिबद्धता समाहित है। इसके अतिरिक्त प्रेम के विचार को साहित्य की अलग अलग विधाओं और सिनेमा जिसकी परिधि में हमेशा प्रेम रहा है पढ़कर,सुनकर और देखकर समझा है और उसके प्रतिरोधी स्वरूप को भी जाना है। समाज-वैज्ञानिक प्रेम के विषय में गहन और व्यापक विचार-विमर्श कर इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि प्रेम की कोई एक सार्वभौमिक परिभाषा नहीं दी जा सकती है। सामाजिक दृष्टि से देखने पर प्रेम अपनी आत्मनिष्ठता के बावजूद वस्तुनिष्ठ संरचनाओं (कास्ट,क्लास, जेंडर,सत्ता,उत्पादन संबंध और बाजार) से भी प्रभावित होता है। समाज-विज्ञान के विकास से पूर्व प्रेम जैसे विषयों पर केवल साहित्य और दर्शन में ही चर्चा होती थी। साहित्य की तमाम विधाओं में प्रेम को सार्वभौम माना जाता था लेकिन समाज - विज्ञान अलग-अलग संस्कृतियों, समाजों, सामाजिक संरचनाओं के चलते प्रेम के एक रूप को स्वीकार नहीं करता है। प्रेम के आधुनिक विमर्श में उसका वर्गीकरण छह श्रेणियों में किया गया है। श्रेणियों के नामकरण प्राचीन यूनानी दर्शन के पदों पर आधारित है। प्रेम की पहली श्रेणी 'इरोज़' है जो काम का यूनानी देवता है। इससे जाहिर होता है कि इरोज़ के नाम से जो प्रेम की श्रेणी है उसमें दैहिकता की प्रधानता है इसलिए इसे ऐंद्रिक प्रेम भी कहा जा सकता है। प्रेम की दूसरी श्रेणी 'मैनिया' है। यह एक तरह का उन्मादी प्रेम है जिसमें व्यक्ति अपने प्रेमी/प्रेमिका के पीछे दीवाना हो जाता है। अपने प्रेमी/प्रेमिका पर कब्जा करने की इच्छा रखने वाला प्रेम हिंसक भी हो सकता है। कभी कभी एकतरफा प्रेम होने के कारण इसके दुष्परिणाम घोर आपराधिक कृत्यों में भी सामने आते हैं। प्रेम की तीसरी श्रेणी 'स्टोज' की होती है। जिसका विकास धीरे- धीरे शांतिपूर्ण तरीके से लंबे समय में होता है।

प्रेम की चौथी श्रेणी को 'एगैप' यानी परोपकार प्रधान प्रेम जिसमें व्यक्ति प्रेम के अतिरिक्त कुछ नहीं चाहता और अपने प्रेमी/प्रेमिका को अधिक से अधिक देना चाहता है। प्रेम की पांचवी श्रेणी 'प्रैग्मा' यानी व्यावहारिक और परिणामवादी प्रेम। इसमें व्यक्ति अपने साथी की खूबी या सामाजिक आर्थिक स्थिति और उपलब्धियों पर फ़िदा हो जाता है। प्रेम की छठी श्रेणी 'लुडुस' जो अत्यंत अल्पकालीन और क्षणिक है। इसमें किसी को अपने मकसद के लिए बहलाना,फुसलाना और मकसद पूरा हो जाने पर अलग हो जाना शामिल है। प्रेम की इन छह श्रेणियों को दो प्रकार में विभाजित किया जा सकता है। पहला प्रकार रोमानी प्रेम का है जिसमें रोमानी,ऐंद्रिक और उन्मादी प्रेम को शामिल किया जा सकता है जिसकी ज़मीन भावपूर्ण,कामनाप्रधान और तर्क से परे होती है। दूसरा प्रकार सहचर-उन्मुख प्रेम का है जो अधिक सचेत और जागरूक मानी जाती है जिसकी समझ अपेक्षाकृत समझ-बूझ कर अपना साथी चुनने के लिए बनती है। प्रेम की श्रेणी विभाजन का यह कतई मतलब नहीं है कि कोई भी प्रेमी/प्रेमिका प्रेम किसी एक श्रेणी के ही होकर रह जाते हैं। उनकी भावना,उनके मनोभाव समय और परिस्थिति के साथ बदलते रहते हैं तो भले ही उनके प्रेम की शुरुआत

ऐंद्रिकता से हुई हो लेकिन मैत्रीपूर्ण या परोपकार प्रधान प्रेम के रूप में भी विकसित हो सकती है। इसी के साथ कोई एक व्यक्ति अन्य दो व्यक्तियों के साथ अलग-अलग किस्म का प्रेम भी कर सकता है। एक के लिए उसके मन में ऐंद्रिक प्रेम हो सकता है और दूसरे के लिए परोपकारी प्रेम भी विकसित हो सकता है। प्रेम को और अधिक विस्तृत रूप से मनोविज्ञान के द्वारा समझा जा सकता है। मनोवैज्ञानिक कार्ल युंग और उनके साथियों की मान्यता है कि रोमानी प्रेम किसी व्यक्ति के प्रति अचानक पैदा हुए अनकॉन्सस अट्रैक्शन से उपजता है। युंग के अनुसार मनुष्य के व्यक्तित्व के दो हिस्से होते है सचेत (कॉन्शस) और अचेत (अनकॉन्स)। आम तौर पर पुरुष के भीतर का हिस्सा स्त्री लिंग की ओर स्त्री के भीतर पुरुष लिंग की नुमाइंदगी करता है। कार्ल युंग के इस सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति जब किसी के प्रति अचानक आकर्षण महसूस करता है तो वह अपनी ही चेतना के उस हिस्से से प्रेम कर रहा होता है जिसके बारे में उसे पता नहीं है और उसके भीतर मौजूद विपरीत जेंडर का प्रतिनिधित्व कर रहा है। पुरुष का यह अवचेतन उसकी मां से और स्त्री का अवचेतन उसके पिता से प्रभावित होगा। प्रेम के स्त्री-पुरुष के लैंगिक आयामों की कई धारणाएं है जिसमें स्त्रियों को पुरुषों के मुकाबले अधिक रोमांटिक होती हैं यह बताया गया है और पुरुष सोच समझकर प्रेम में पड़ता है यह बताया गया है। लेकिन यह धारणा अनुसंधान पर खरी नहीं उतरती है। अनुसंधान बताते हैं कि स्त्रियां पुरुषों की अपेक्षा ऐंद्रिक या उन्मादी प्रेम में कम पड़ती हैं वे मैत्रीपूर्ण और परिणामवाद प्रेम की तरफ झुकती है। इसके सामाजिक कारण भी है,स्त्री स्थायित्व और सुरक्षा चाहती है। प्रेम में विफल होने पर स्त्री को सामाजिक तौर पर अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। एंथनी गिडेंस ने उत्तर-आधुनिक युग के लिए रोमानी प्रेम के बरक्स संगमी प्रेम की अवधारणा प्रतिपादित की है। संगमी प्रेम (कॉनफ्लुएंट लव) इस प्रेम में स्त्री/पुरुष अपने अपने स्वतंत्र अस्तित्व को कायम रखते हुए साथ रहते है ठीक दो नदियों के समान जो साथ साथ बहती हैं और एक खास मुकाम पर एक-दूसरे के साथ संगम करती है और फिर अपने अपने रास्ते पर बहती चली जाती हैं। इरिगरे ने प्रेम विमर्श में स्व-प्रेम की धारणा को विकसित किया। इरिगरे तर्क देती हैं कि स्व-प्रेम ही द्विपक्षीयता की कुंजी है। दोनों पक्षों को एक-दूसरे से प्रेम करते हुए अपने स्वतंत्र अस्तित्व को क़ायम रखना ही होगा। प्रेम करने वालों को पता होना चाहिए कि अलग कैसे हुआ जाता है और फिर साथ कैसे आया जाता है। इन सभी विमर्शों और सिद्धांतों पर बात करने का आशय महज इतना है कि हम समाज-विज्ञान के प्रेम विमर्श और खासकर युवाओं के मनोविज्ञान को बेहतर तरीके से समझ सकें और नई परिस्थितियों से सामंजस्य स्थापित कर सकें।

वैसे प्रेम की सभी श्रेणियों को फिल्मों में भी दर्शाया गया है। अभी हाल में सैयारा फिल्म युवाओं में अत्यंत लोकप्रिय हुई है जिसमें प्रेम की रोमानी,ऐंद्रिक उन्मादी और 'एगैप' सभी श्रेणियां मौजूद हैं। नफरत के इस दौर में आवश्यक है कि प्रेम,मोहब्बत और इश्क के पैगाम को फैलाया और विस्तृत किया जाए जो मानव,मानव अस्तित्व के लिए आवश्यक है।

वैलेंटाइन डे

एकता शर्मा

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

अब क्या मिसाल दूँ, मैं तुम्हारे प्यार की

महान विचारक लेमेन्नाइस के अनुसार, जो सचमुच प्रेम करता है उस मनुष्य का हृदय धरती पर साक्षात स्वर्ग है। ईश्वर उस मनुष्य में बसता है, क्योंकि ईश्वर प्रेम है। दार्शनिक लूथर के विचार हैं कि प्रेम ईश्वर की प्रतिमा है और निष्प्राण प्रतिमा नहीं, बल्कि दैवीय प्रकृति का जीवंत सार है जिससे कल्याण के गुण छलकते रहते हैं। मनोवैज्ञानिक वेंकर्ट का मत है, प्यार में व्यक्ति किसी ऐसे व्यक्ति की कामना करता है, जो एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में उसकी विशेषता को कबूल करे, स्वीकारे और समझे! उसकी यह इच्छा ही अक्सर पहले प्यार का कारण बनती है। जब ऐसा शख्स मिलता है तब उसका मन ऐसी भावनात्मक संपदा से समृद्ध हो जाता है, जिसका उसे पहले कभी अहसास भी नहीं हुआ था।

वैलेंटाइन-डे पर सारी दुनिया प्यार के रंग में सराबोर होती है। यह जाने बिना प्यार की बासंती बयार में बहते रहते हैं कि आखिर 'प्यार' क्या बला है? दरअसल, प्यार एक विलक्षण अनुभूति है। सारे संसार में इसकी खूबसूरती और मधुरता की मिसालें दी जाती हैं। इस सुकोमल भाव पर सदियों से बहुत कुछ लिखा, पढ़ा और सुना जाता रहा है! बावजूद इसके इसे समझने में भूल होती रही है। मनोवैज्ञानिकों ने इस मीठे अहसास की भी गंभीर विवेचना कर डाली! फिर भी मानव मन ने इस शब्द की आड़ में छला जाना जारी रखा है। अलग-अलग विद्वानों, लेखकों और विचारकों ने प्यार को अपने-अपने नजरिए से देखा और बयां किया है।

महान विचारक लेमेन्नाइस के अनुसार, जो सचमुच प्रेम करता है उस मनुष्य का हृदय धरती पर साक्षात स्वर्ग है। ईश्वर उस मनुष्य में बसता है, क्योंकि ईश्वर प्रेम है। दार्शनिक लूथर के विचार हैं कि प्रेम ईश्वर की प्रतिमा है और निष्प्राण प्रतिमा नहीं, बल्कि दैवीय प्रकृति का जीवंत सार है जिससे कल्याण के गुण छलकते रहते हैं। मनोवैज्ञानिक वेंकर्ट का मत है, प्यार में व्यक्ति किसी ऐसे व्यक्ति की कामना करता है, जो एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में उसकी विशेषता को कबूल करे, स्वीकारे और समझे! उसकी यह इच्छा ही अक्सर पहले प्यार का कारण बनती है। जब ऐसा शख्स मिलता है तब उसका मन ऐसी भावनात्मक संपदा से समृद्ध हो जाता है, जिसका उसे पहले कभी अहसास भी नहीं हुआ था।

मनोवैज्ञानिक युंग कहते हैं कि प्रेम करने या किसी के प्रेम पात्र बनने से यदि किसी को अपनी कोई कमी से छुटकारा मिलता है, तो संभवतः यह अच्छी बात होगी! लेकिन, इसकी कोई गारंटी नहीं है कि ऐसा होगा ही! या इस तरह से उसे मुक्ति मिल ही जाएगी। मनोवैज्ञानिक हॉर्नी स्वस्थ प्रेम को संयुक्त रूप से जिम्मेदारियां वहन करने और साथ-साथ कार्य करने का अवसर बताते हैं। उनके अनुसार प्रेम में निष्कपटता और दिल की गहराई बहुत जरूरी है।मैस्लो ने स्वस्थ प्रेम के जिन लक्षणों की चर्चा की है, वे गंभीर और प्रभावी है। वे कहते हैं कि सच्चा प्यार करने वालों में ईमानदारी से पेश आने की प्रवृत्ति होती है। वे अपने को खुलकर प्रकट कर सकते हैं। वे बचाव, बहाना, छुपाना या ध्यानाकर्षण जैसे शब्दों से दूर रहते हैं। मैस्लो ने कहा है स्वस्थ प्रेम करने वाले एक-दूसरे की निजता स्वीकार करते हैं। आर्थिक या शैक्षणिक कमियों, शारीरिक या बाह्य कमियों की उन्हें चिन्ता नहीं होती जितनी व्यावहारिक गुणों की।

सुप्रसिद्ध लेखिका अमृता प्रीतम ने लिखा है 'जिसके साथ होकर भी तुम अकेले रह सको, वही साथ करने योग्य है। जिसके साथ होकर भी तुम्हारा अकेलापन दूषित न हो। तुम्हारी तन्हाई, तुम्हारा एकान्त शुद्ध रहे। जो अकारण तुम्हारी तन्हाई में प्रवेश न करे। जो तुम्हारी सीमाओं का आदर करे। जो तुम्हारे एकांत पर आक्रामक न हो। तुम बुलाओ तो पास आए। इतना ही पास आए जितना तुम बुलाओ। जब तुम अपने भीतर उतर जाओ तो तुम्हें अकेला छोड़ दे। खलील जिब्रान ने प्रेम पर इतना खूबसूरत लिखा है कि जितना पढ़ो उतना कम ही लगता है। खलील हर बार एक नई व्याख्या और नए दर्शन के साथ प्रेम पर अभिव्यक्त होते हैं, जैसे प्रेम केवल खुद को ही देता है और खुद से ही पाता है। प्रेम किसी पर अधिकार नहीं जमाता, न किसी के अधिकार को स्वीकार करता है। प्रेम के लिए तो प्रेम का होना ही बहुत है।'

कभी ये मत सोचो कि तुम प्रेम को रास्ता दिखा रहे हो या दिखा सकते हो! क्योंकि, अगर तुम सच्चे हो तो प्रेम खुद तुम्हें रास्ता दिखाएगा। प्रेम के अलावा प्रेम की ओर कोई इच्छा नहीं होती पर अगर तुम प्रेम करो और तुमसे इच्छा किए बिना न रहा जाए, तो यही इच्छा करो कि तुम पिघल जाओ प्रेम के रस में और प्रेम के इस पवित्र झरने में बहने लगो! प्रेम के रस में डूबो तो ऐसे कि जब सुबह तुम जागो तो प्रेम का एक और दिन पा जाने का अहसान मानो। फिर रात में जब तुम सोने जाओ तो तुम्हारे दिल में अपने प्रियतम के लिए प्रार्थना हो और होठों पर उसकी खुशी के लिए गीत। ईसा मसीह ने कहा कि प्रेम सबसे करो, भरोसा कुछ पर करो और नफरत किसी से न करो, जबकि किसी अज्ञात प्रेम विशेषज्ञ की यह बात भी गौरतलब है कि पुरुषों का प्रेम आंखों से और महिलाओं का प्रेम कानों से शुरू होता है। अब्राहम लिंकन के लिए प्रेम की परिभाषा यह है कि किसी दुश्मन को पूरी तरह बर्बाद करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि उससे प्रेम करना शुरू कर दो। प्रेम की महिमा बखान करते हुए सेंट ऑगस्टिन सलाह देते है कि प्यार से हमेशा कोसों दूर रहने से अच्छा है प्यार करके तबाह हो जाना। जबकि, प्रेम का दूसरा रूप बताते हुए मुंशी प्रेमचंद ने कहा था कि प्रेम सीधी-साधी गाय नहीं है, खूंखार शेर है, जो अपने शिकार पर किसी की आंख नहीं पड़ने देता। महात्मा गांधी भी प्रेम से अछूते नहीं रहे, उनका कहना है कि प्रेम से भरा हृदय अपने प्रेम पात्र की भूल पर दया करता है और खुद घायल हो जाने पर भी उससे प्यार करता है। अब यह आप पर तय करता है कि आप अपने लिए किस तरह के प्रेम को अनुकूल पाते हैं।

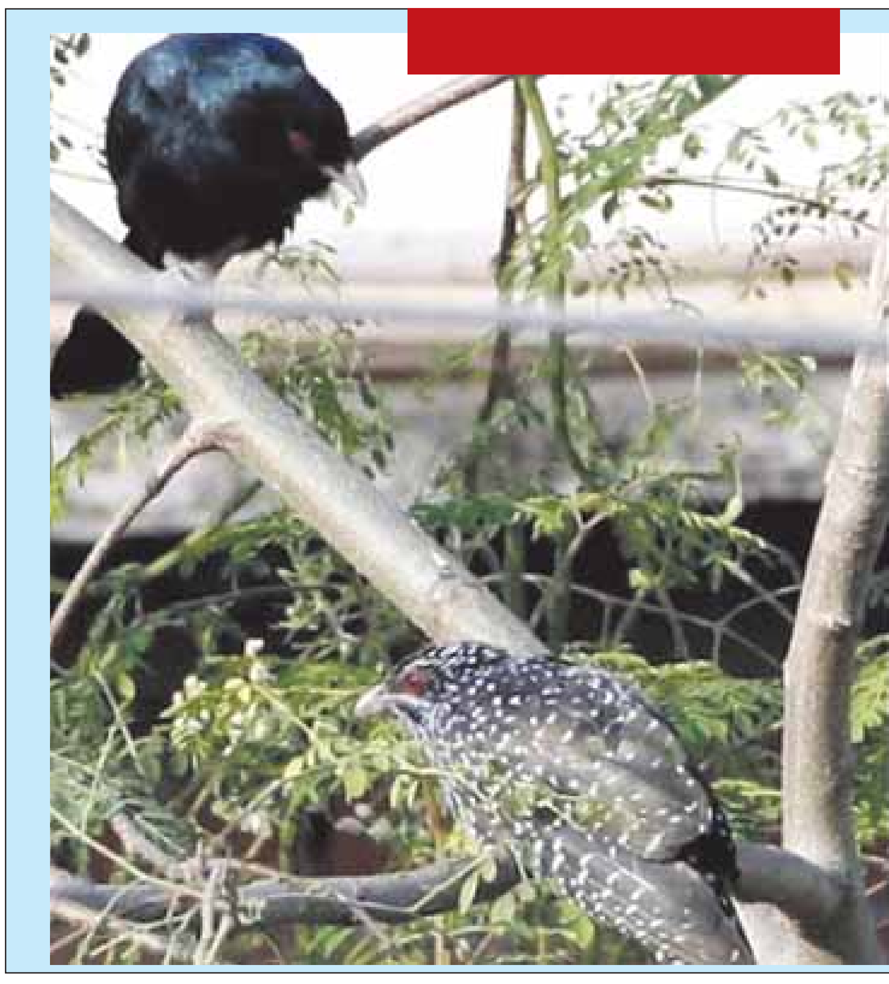

जिसकी आवाज से मोहब्बत जुड़ी है

प्यार का इज़हार किसी एक दिन का मोहताज नहीं होता, न यह किसी तहज़ीब की जागीर है, न किसी विरासत की सरहदों में क़ैद। जब दिल में मुहब्बत का मौसम उतरता है, तो कुदरत की हर शै' इश्क़ का पैग़ाम देने लगती है। हवाओं में नर्मी घुल जाती है, धूप में मिठास आ जाती है, और फ़िज़ा में एक अनकही सी सरगोशी तैरने लगती है।

मुहब्बत हमने किताबों से नहीं, कुदरत से सीखी है। क्या शायर, क्या कवि–सबने इसी जज़्बे को अल्फ़ाज़ का लिबास पहनाया है।

आइए, आज आपको मिलवाते हैं एक ऐसे परिंदे से, जिसकी आवाज़ सदियों से आशिक़ों के दिलों को छूती आई है–नर एशियाई कोयल। कौवे से भी ज्यादा स्याह रंग, मगर दिल में बेपनाह मुहब्बत। और उसकी महबूबा–नाज़ुक सी मादा, धूसर रंग की, जिस्म पर बिखरे खूबसूरत धब्बे, जैसे किसी फ़नकार ने मोहब्बत से नक़्श उकेरे हों। यह जोड़ा ख़ामोशी से अपने इश्क़ की दास्तान बुनता है। और जैसे ही आम के दरख़्तों पर बौर आते हैं, उसकी कूक से बग़ीचे गूंज उठते हैं– 'कुहू-कुहू'। वह आवाज़ महज़ एक पुकार नहीं, दिल से निकली दुआ सी लगती है।

इश्क़ रंग नहीं देखता, सरहदें नहीं मानता–ठीक वैसे ही जैसे खजुराहो की धरती पर कई गोरी मेमों ने सांवले गाइडों की मोहब्बत में अपना घर-बार छोड़ यहीं की हो कर रह जाना कबूल किया।

कुदरत हर साल हमें याद दिलाती है– प्यार का मौसम जब आता है, तो हर डाल, हर पत्ता, हर परिंदा उसका ऐलान करता है।

तो आइए, इस मौसम-ए-मोहब्बत में दिल की खिड़कियां खोल दीजिएज्क्योंकि इन दिनों नफरत का बाजार तो यूं गर्म है इसपे कुछ पानी डालिए दो बोल प्रेम के गुनगुनाइये प्यार का दिन कोई तारीख़ नहीं, एक एहसास है। हैप्पी वैलेंटाइन डे।

फोटो एवं आलेख: अबरार पठान

फिर लौट आए

– रामेश्वरम तिवारी

लो! फिर आ गए बहारों वाले दिन,
सतरंगी, खुशनुमा नज़ारों वाले दिन।

दरिया-ए-दिल में हिलोरें उठने लगी,
बदन की शाख के सहारों वाले दिन।

अरमानों को गोया पँख लग गए हैं,
लौट आए चाँद- सितारों वाले दिन।

बिना पिए ही युवा मदांध हुए जा रहे,
प्रीतम की बाँहों, उपहारों वाले दिन।

विरही मन मिले,मुरझाए सुमन खिले,
फिर, फिरे देवदास- पारो वाले दिन।

महाशिवरात्रि पर्व पर शिव पार्वती की दुर्लभ आलिंगनबद्ध पाषाण प्रतिमा के शिव मंदिर में लगेगा 5 दिवसीय मेला

हीरालाल गोलानी सोहागपुर । भोपाल से 125 किलोमीटर, नर्मदापुरम से 50 किलोमीटर दूर , पिपरिया से 26 किलोमीटर दूर, पचमढ़ी से 67 की दूरी पर पिपरिया नर्मदापुरम राज्य मार्ग 22 पर स्थित शिव मंदिर में शिव-पार्वती की आलिंगनबद्ध प्रतिमा पर महाशिवरात्रि पर्व 15 फरवरी को मेला प्रतिवर्षानुसार आयोजित किया जा रहा है। लेकिन इस साल प्रशासन ने गणमान्य नागरिकों के आग्रह पर मेले का आयोजन पांच दिवसीय किया गया है। उल्लेखनीय है क नगर के वरिष्ठ वकील स्वर्गीय प्रेमशंकर तिवारी के खेत में 10 अगस्त 1961 में हल चलते समय हरवाहे मंशाराम यादव को एक अद्भुत और प्राचीन पाषाण शिव-पार्वती की प्रतिमा मिली थी। उक्त खबर आग की तरह क्षेत्र में फैला गई थी।नगर ही नहीं आस-पास के नागरिकों एवं मातृशक्ति प्रतिमा के दर्शन को उमड़ पड़े थे। पहले प्रतिमा को एक पेड़ के नीचे चबूतरे पर स्थापित किया गया था। बाद में रेल्वे ठेकेदार गोपी सेठ ने सन् 1962 में शिव मंदिर का निर्माण कराया था। प्रतिमा के प्राण प्रतिष्ठा समारोह के अवसर पर यहां एक महीने मेला लगाया गया था। जिसमें सोहागपुर के मुख्य बाजार को बंद रखकर समस्त दुकानें मेला स्थल पर लगाई गई थी। इस प्राण प्रतिष्ठा समारोह में नगर के समस्त गणमान्य नागरिक उत्साह से शामिल होने कार्यक्रम को यादगार बनाने में लगे थे। उल्लेखनीय है कि इस प्राण प्रतिष्ठा समारोह के मुख्य अतिथि तत्कालीन विधानसभा अध्यक्ष पंडित कुंजीलाल दुबे थे। प्राण-प्रतिष्ठा की शोभायात्रा मातापुरा से स्वर्गीय रामगोपाल खंडेलवाल, गोपाल सेठ के निवास से निकलकर शिव मंदिर पहुंची थी। इस संबंध में वकील प्रांजल तिवारी ने बताया शोभायात्रा में दादाजी स्वर्गीय प्रेमशंकर तिवारी, स्वर्गीय चंदी बाबू मारूपुरा, स्वर्गीय श्री शिवहरे, द्वारकाप्रसाद मिश्रा,स्वर्गीय लक्ष्मणदास गोलानी, स्वर्गीय मुक्दीलाल मालवीय, स्वर्गीय हजारीलाल जैन, सहित नगर की कई नामचीन हस्तियां ने भारी संख्या में उपस्थिति दर्ज कराई थी।

विशेष कलात्मकता – यह एक दुर्लभ और पाषाण प्रतिमा है। इसमें शिव जी और पार्वती जी आलिंगनबद्ध (गले लगे हुए) मुद्रा में हैं। इसके साथ इस पाषाण प्रतिमा में पूरा शिव परिवार विराजमान हैं। यह प्रतिमा प्रेम और पारिवारिक सामंजस्य का अद्भुत प्रतीक है। प्रतिमा को अज्ञात कलाकारों ने शिव परिवार को एक साथ एक पाषाण पत्थर का अत्यंत सुंदरता के साथ उकेरकर कलात्मक रचना की है।

मान्यता– यह शिव-पार्वती जी की आलिंगनबद्ध गले लगे हुए पाषाण प्रतिमा 16वीं सदी की बताई जाती है। किंवदंती ही नहीं प्राचीन काल से प्रसिद्ध है कि मध्यप्रदेश का सोहागपुर, जिसे प्राचीन काल में 'शोणितपुर' के नाम की एक ऐतिहासिक नगरी हुआ करती थी। यह 'शोणितपुर' असुरराज बाणासुर की राजधानी थी। असुर राज बाणासुर ने भगवान शिव को प्रसन्न करके उन्हें नगर अध्यक्ष बनने का अनुरोध किया था। कहां जाता है कि भगवान शिव ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर पुत्रों और गणों सहित शोणितपुर में निवास किया था।

600 करोड़ रूपए की नई सिंचाई परियोजना से खेत होंगे सिंचित, 33 गांवों को मिलेगा लाभ

नोहलेश्वर महोत्सव आस्था के साथ संस्कृति, परम्परा और सामाजिक समरसता का उत्सव : सीएम डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि नोहलेश्वर महादेव की महिमा ऐसी है जो यहाँ एक बार आता है, उसका मन बार-बार यहां आने को करता है। कृपावंत, कृपाशंकर भगवान नोहलेश्वर महादेव के आशीर्वाद से हम प्रदेश के विकास और जनकल्याण के लिए पूरी ऊर्जा और जिम्मेदारी के साथ आगे बढ़ रहे हैं। नोहलेश्वर महोत्सव आस्था ही नहीं, स्थानीय संस्कृति, परम्परा और सामाजिक समरसता का भी उत्सव है। हमारी सरकार आस्था के स्थलों के संरक्षण और पर्यटन विकास के लिए प्रतिबद्ध है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शुक्रवार को दमोह जिले के ग्राम नोहटा में नोहलेश्वर महोत्सव मेले के अवसर पर आयोजित किसान सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मेले का दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारंभ किया। साथ ही नोहलेश्वर मंदिर परिसर और मेला परिसर में विभिन्न विभागों द्वारा लगाई गई विकास प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने क्षेत्रीय जनता की मांग पर नोहटा को परीक्षण के उपरांत नगर परिषद बनाने की घोषणा की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि दमोह में 2 करोड़ रूपए की लागत से गीता भवन का निर्माण किया जाएगा। दमोह जिले में बांदकपुर-सेमरखो जलाशय की क्षमता में वृद्धि कर 600 करोड़ रूपए की नई सिंचाई परियोजना विकसित की जाएगी। इससे जिले के 33 गांवों के खेतों को सिंचाई के लिये भरपूर पानी मिलेगा। दमोह में 10 करोड़ रूपए की लागत से वॉटर स्पोर्ट्स, बोट क्लब सहित अन्य पर्यटन गतिविधियों का विकास किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि तेंदूखेड़ा और हटा में खेल गतिविधियों के प्रोत्साहन के लिए नए स्टेडियम बनाए जाएंगे। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सुप्रसिद्ध भजन गायिका शहनाज अख्तर का अभिनंदन भी किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार दमोह के साथ पूरे बुंदेलखंड के विकास के लिए प्रतिबद्धता से कार्य कर रही है। दमोह के तेंदूखेड़ा में 165 करोड़ की नई योजना को स्वीकृति दी गई है। दमोह के लिए नया फोर लेन भी मंजूर किया गया है। दमोह में पर्यटन के साथ उद्योगों को बढ़ावा दिया जा रहा है। राज्य सरकार शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि सहित सभी क्षेत्रों में समान रूप से प्रयास कर रही है। दमोह जिले में जैविक खेती के प्रोत्साहन के लिए जैविक हाट लगाए जा रहे हैं। अब तक जिले में 69 जैविक हाटों में 28 लाख रुपए के उत्पादों की बिक्री हुई है। उन्होंने जिला प्रशासन द्वारा किसानों को खाद वितरण के लिए की गई ई-टोकन की व्यवस्था की सराहना की।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि किसान हमारे अन्नदाता हैं। उनकी खुशहाली और समृद्धि से ही देश खुशहाल बनेगा। उन्होंने कहा कि हम खेती के साथ पशुपालन को भी प्रोत्साहन दे रहे हैं। कृषि, पशुपालन और खाद्य प्रसंस्करण बढ़ाना हमारी सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। पशुपालन से दूध उत्पादन बढ़ेगा। हमने प्रदेश का दूध उत्पादन 9 से बढ़ाकर 20 प्रतिशत तक करने का लक्ष्य रखा है। हमारी सरकार पशुपालन, गौपालन और गौ-संरक्षण की दिशा में निरंतर प्रयासरत है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने किसी भी देश के साथ रिश्तों में किसानों के हितों से कभी समझौता नहीं किया। खेतों में किसान और सीमा पर जवान, दोनों हमारे लिए बराबर सम्मान रखते हैं। राज्य सरकार किसानों के स्वास्थ्य का भी विशेष ध्यान रख रही है। विकास कार्यों को गति देने में हमारी सरकार सदैव जनता के साथ खड़ी है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारतीय संस्कृति में माताओं-बहनों का स्थान सर्वोपरि है। हम अपने देश को भी माता का दर्जा देते हुए भारत माता कहकर सम्मान देते हैं। माताएं-बहनें हमारे परिवार की गरिमा हैं। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार हमेशा लाड़ली बहनों के साथ है। लाड़ली बहनों को हर महीने 1500 रुपए की सहायता राशि दी जा रही है। वे अपनी मेहनत और निष्ठा से पूरे कुल, खानदान, परिवार का लालन-पालन करती हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि दमोह में औद्योगिक प्रक्षेत्र के विकास के साथ क्षेत्र के युवाओं को रोजगार के नए अवसर मिलेंगे। सूखे खेत को पानी मिल जाए, तो फसल सोने जैसी हो जाती है। दमोह जिले को देश की पहली नदी जोड़ो केन-बेतवा लिंक परियोजना से सिंचाई के लिए पानी मिलेगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने पहली बार श्रीकृष्ण जन्माष्टमी और गीता जयंती को भव्यता के साथ मनाने की शुरुआत की। मध्यप्रदेश, देश का एकमात्र राज्य है, जो विकास के साथ विरासत का भी संरक्षण कर रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि नोहटा का नोहलेश्वर मंदिर 1100 साल से अधिक प्राचीन है, जिसे कलचुरी साम्राज्य में महारानी नोहला ने बनवाया था। नोहलेश्वर महोत्सव के आयोजन से इस क्षेत्र के पर्यटन को नई ऊर्जा मिल रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश की धरती पर चीतों के पुनर्स्थापन से नया चमत्कार हुआ है। श्योपुर के कूनो नेशनल पार्क में विदेश से 20 चीता लाए गए थे, अब 35 चीते प्रदेश की धरती पर दौड़ लगा रहे हैं, चीतों का परिवार बढ़ रहा है। कुछ दिन पहले मादा चीता आशा ने 5 शावकों को जन्म दिया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि इसी साल जून में नौरादेही अभयारण्य में चीतों को छोड़ा जाएगा। मध्यप्रदेश टाइगर, चीता, गिद्ध और घड़ियाल के मामले में देश में शीर्ष स्थान पर है। उन्होंने कहा कि वन्य जीव पर्यटन को बढ़ाने के लिए राज्य सरकार ने होम-स्टे योजना बनाई है। इससे लोगों को रोजगार मिलेगा और वे पर्यटकों को अपने घरों में होम-स्टे बनाकर ठहरा सकेंगे। होम-स्टे तैयार करने वाले हितग्राहियों को शासकीय अनुदान भी दिया जा रहा है। उन्होंने होम-स्टे संचालनकर्ताओं से कहा कि जब पर्यटक आएं, तो उनकी अच्छी तरह मेहमाननवाज़ी करे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जिन पर्यटन क्षेत्रों में होम-स्टे चल रहे हैं, वहाँ होम-स्टे से ग्रामीणों की आय तेजी से बढ़ रही है। संस्कृति, पर्यटन एवं धार्मिक न्यास और धर्मस्व राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री धर्मेंद्र सिंह लोधी ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में प्रदेश निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर है। मध्यप्रदेश ने ऊर्जा के क्षेत्र में प्रगति करते हुए आज 26 हजार मेगावॉट से अधिक बिजली उपलब्धता सुनिश्चित की है।

बागेश्वर धाम में एक साथ 300 बेटियों की हल्दी रस्म

सीएम यादव ने धीरेंद्र शास्त्री को लगाई हल्दी, कहा– 3000 बेटियों का विवाह कराएगी सरकार

खजुराहो (नप्र)। खजुराहो के पास बागेश्वर धाम में सातवां सामूहिक कन्या विवाह महोत्सव भव्य स्तर पर जारी है। शुक्रवार को 300 बेटियों की हल्दी रस्म हुई, जिसमें मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव शामिल हुए। मंच पर राजनगर विधायक अरविंद पटेरिया

और मंत्री लखन पटेल भी मौजूद रहे। सीएम को बुंदेली पगड़ी बांधी गई। बागेश्वर बाबा पंडित धीरेंद्र शास्त्री ने पूजन विग्रह, तस्वीर और बलदाऊ जी का अस्त्र 'हल' भेंट किया। सीएम ने मंच से 300 नहीं, 3000 बेटियों के विवाह का आह्वान करते हुए 51-51 हजार की सहायता देने का ऐलान किया।

सीएम ने धीरेंद्र शास्त्री को लगाई हल्दी

सीएम ने कार्यक्रम स्थल पर मंडप पूजन किया। उन्होंने धीरेंद्र शास्त्री को हल्दी लगाई, जबकि शास्त्री ने सीएम की पीठ पर हल्दी के छाप छोड़े। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष विष्णु दत्त शर्मा के गाल पर भी हल्दी लगाई गई। सभी अतिथियों और विधायकों के साथ परंपरागत हल्दी की रस्म निभाई गई। मंच पर सीएम ने 6 मिनट की डॉक्यूमेंट्री भी देखी, जिसमें चयनित बेटियों के जीवन संघर्ष की कहानियां दिखाई गईं। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने छतरपुर जिले के बागेश्वर धाम में महाशिवरात्रि के अवसर पर 3 दिवसीय सप्तम 300 सामूहिक कन्या विवाह महोत्सव में पूजा अर्चना की।

90 प्रतिशत सब्सिडी का वादा, 70 प्रतिशत कर्ज का बोझ

सोलर पंप योजना में किसानों से विश्वासघात : मुकेश नायक

भोपाल। मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के मीडिया विभाग अध्यक्ष मुकेश नायक ने प्रदेश सरकार की सोलर पंप योजना को लेकर गंभीर सवाल उठाते हुए कहा कि किसानों से 90 प्रतिशत सब्सिडी का वादा किया गया, लेकिन वास्तविकता में किसानों को भारी बैंक ऋण के बोझ तले धकेल दिया गया है।

श्री मुकेश नायक ने कहा कि उपलब्ध आधिकारिक ऋण स्वीकृति पत्रों एवं बैंक दस्तावेजों के अनुसार स्थिति चिंताजनक है

- परियोजना लागत लगभग 4,04,475 दर्शाई गई।
- वास्तविक सब्सिडी मात्र 1,09,537 दर्ज की गई।
- किसान से 41,537 मार्जिन मनी ली गई।
- 2,53,402 का बैंक ऋण किसानों के नाम स्वीकृत किया गया।
- 84 महीनों तक लगभग 3,987 प्रतिमाह ईएमआई निर्धारित।
- 8.30 प्रतिशत ब्याज दर तथा देरी की स्थिति में अतिरिक्त दंड ब्याज।

उन्होंने कहा कि जब 90 प्रतिशत सब्सिडी देने का सार्वजनिक दावा किया गया था, तब किसानों को ढाई लाख रुपये से अधिक के बैंक ऋण में क्यों डाला गया?

श्री नायक ने सरकार से सीधे प्रश्न करते हुए कहा

- 90 प्रतिशत सब्सिडी की घोषणा किस आधार पर की गई?
- वास्तविक सब्सिडी प्रतिशत क्या है?
- इसे सार्वजनिक क्यों नहीं किया गया?
- क्या किसानों को स्पष्ट रूप से बताया गया कि 10 प्रतिशत अंशपूंजी जमा करने के बाद भी उनके नाम पर भारी बैंक ऋण चढ़ेगा?
- क्या सोलर कंपनियों को पूर्ण भुगतान बैंक के माध्यम से किया जा चुका है?
- क्या इस प्रक्रिया में किसी प्रकार की कमीशनखोरी या बिचौलियों की भूमिका रही है?
- जिन किसानों पर ऋण डाला गया है, उसका पुनर्मूल्यांकन कर शेष राशि सरकार स्वयं वहन करेगी या नहीं?
- पूरे प्रकरण की स्वतंत्र न्यायिक जांच कब कराई जाएगी?

श्री नायक ने आगे कहा कि प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में किसान आज भी खेती के लिए 10 घंटे निरंतर बिजली को तरस रहे हैं। कई गांवों में घरेलू बिजली की भी नियमित उपलब्धता नहीं है। ऐसे में सोलर योजना किसानों के लिए राहत का माध्यम बननी चाहिए थी, लेकिन इसे ऋण योजना में परिवर्तित कर दिया गया।

उन्होंने कहा कि यह योजना आत्मनिर्भरता का माध्यम नहीं, बल्कि किसानों को कर्जदार बनाने का माध्यम बनती दिखाई दे रही है।

श्री नायक ने भारतीय जनता पार्टी, उसके किसान मोर्चा एवं उससे जुड़े संगठनों से भी पूछा कि इस विषय पर उनका मौन क्यों है? क्या यह मौन सहमति का संकेत है?

अंत में उन्होंने कहा कि किसानों की मेहनत पर राजनीति स्वीकार नहीं की जाएगी। प्रदेश का किसान पारदर्शिता चाहता है, और कांग्रेस पार्टी किसानों की आवाज उठाती रहेगी जब तक स्पष्ट जवाब नहीं मिलता।

पं. प्रदीप मिश्रा की कथा में महिला को हार्ट-अटैक, मौत

पंडाल में बैठते ही बिगड़ी तबीयत, यूपी के इटावा से आई थीं शिव महापुराण सुनने

डबरा (ग्वालियर) (नप्र)। ग्वालियर जिले के डबरा में पंडित प्रदीप मिश्रा की शिव महापुराण कथा में शुक्रवार को एक दुखद घटना हो गई। यहां कथा शुरू होने से कुछ ही देर पहले पंडाल में बैठी उत्तर प्रदेश की 65 वर्षीय महिला की हार्ट अटैक से मौत हो गई।

मृतका की पहचान इटावा (उत्तर प्रदेश) निवासी पुष्पा देवी के रूप में हुई है। वह दो दिनों से डबरा के नवग्रह शक्ति पीठ पर कथा में शामिल हो रही थीं। शुक्रवार सुबह जैसे ही वह पंडाल में अपनी जगह पर बैठीं, अचानक उनके सीने में तेज दर्द उठा और वह अचेत होकर गिर पड़ीं।

परिजनों ने की बचाने की कोशिश

पुष्पा देवी के रिश्तेदार संतोष सोनी ने बताया कि वे सुबह समय पर कथा स्थल पहुंच गए थे। अचेत होने के बाद परिजनों ने उनकी छाती को पंप किया (सीपीआर देने की कोशिश की), लेकिन उनके मुंह से झाग निकलने लगा। उन्हें तत्काल कथा परिसर में बने अस्थायी अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने जांच के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया।

2 साल की डीपीसी में 24 एसएफएस अफसर आईएफएस बने

सुरेश कुमार दोनों ही वर्षों की पदोन्नति सूची में, वन और पर्यावरण मंत्रालय ने जारी किया नोटिफिकेशन

भोपाल (नप्र)। एमपी कैडर के राज्य वन सेवा के 24 अधिकारियों को भारतीय वन सेवा (आईएफएस) में पदोन्नति मिली है। इनमें एक अधिकारी सुरेश कुमार अहिरवार का चयन वर्ष 2023 और 2024, दोनों ही वर्षों की चयन सूची में हुआ है।

केंद्रीय वन, जलवायु एवं पर्यावरण मंत्रालय द्वारा जारी नोटिफिकेशन में कहा गया है कि इस अधिकारी के खिलाफ चल रहे आपराधिक प्रकरण के समाप्त होने का राज्य सरकार से प्रमाण पत्र मिलने के बाद ही आगे की कार्रवाई की जाएगी। अहिरवार की आपराधिक प्रकरण संबंधी लंबित रिपोर्ट मिलने के बाद केंद्र सरकार डीपीसी चयन सूची में शामिल नामों में से किसी अन्य अधिकारी को भी बाद में मंजूरी दे सकती है। चयन वर्ष 2023 के लिए हुई डीपीसी में 13 और वर्ष 2024 के लिए हुई डीपीसी में 9 अधिकारियों को आईएफएस अवार्ड किया गया है।

2023 के लिए बने आईएफएस अधिकारी– केंद्रीय वन, जलवायु एवं पर्यावरण मंत्रालय द्वारा जारी नोटिफिकेशन के अनुसार चयन वर्ष 2023 की डीपीसी के बाद सुरेश कुमार अहिरवार, माधव सिंह मौर्य, ज्योति मुड़िया, हरीश चंद्र बघेल और संतोष कुमार रणशोर को पदोन्नत किया गया है। इसके अलावा शीतल प्रसाद शाक्य, बालक राम सिरसाम, भानु प्रकाश बाथम, रामकिशन सोलंकी, रेशम सिंह धुर्वे, मानसिंह मरावी, सुंदर दास सोनवानी और योहान कटारा को भी राज्य वन सेवा से भारतीय वन सेवा में पदोन्नति दी गई है। नोटिफिकेशन में स्पष्ट किया गया है कि सुरेश कुमार अहिरवार को पदोन्नति की अंतिम मंजूरी तभी मिलेगी, जब उनके विरुद्ध लंबित आपराधिक प्रकरण के समाप्त होने का प्रमाण पत्र राज्य सरकार द्वारा दिया जाएगा।

वर्ष 2024 की डीपीसी में इन अधिकारियों को मिला आईएफएस कैडर– चयन वर्ष 2024 के लिए जिन अधिकारियों को आईएफएस अवॉर्ड किया गया है, उनमें विद्याभूषण मिश्रा, राजवेंद्र मिश्रा, सुरेश कुमार अहिरवार, अनुभा त्रिवेदी, जया पांडे त्रिपाठी, मुकेश पटेल, धीरेंद्र प्रताप सिंह, मनोज कुमार सिंह, लाल सुधाकर सिंह, शिको राही किचोलिया, विजेंद्र खोबरागड़े और भारत सोलंकी के नाम शामिल हैं।

बुंदेलखंड सर्वदलीय संघर्ष मोर्चा का दिल्ली में धरना

भोपाल। 'सरकार यदि आबादी के हिसाब से बजट आवंटित करे तो बुंदेलखंड जैसे अंचलों का पिछड़ापन, बेरोजगारी और ग़रीबी दूर हो सकती है, लेकिन सरकार एक ओर बुलेट ट्रेन पर एक लाख करोड़ खर्च कर सकती है लेकिन बुंदेलखंड को उसकी जरूरत के मुताबिक रेल लाइन के लिए पांच हजार करोड़ भी नहीं देना चाहती। सही नीति से इसे ठीक किया जा सकता है।' सोशलिस्ट चिंतक व जननेता रघु ठाकुर ने दिल्ली के जंतर-मंतर पर बुंदेलखंड सर्वदलीय नागरिक संघर्ष मोर्चा के धरना में बोलते हुए यह बात कही। उन्होंने आह्वान किया कि सरकार की भेदभावपूर्ण नीति का प्रतीकात्मक विरोध आने वाली होली से शुरू किया जाये।इस धरने में शामिल होने व समर्थन देने बुंदेलखंड सहित छत्तीसगढ़ व विदर्भ से भी लोग आये थे। रघु ठाकुर की अगुवाई में साल 2009 से यह धरना हर साल जाड़ों में होता है। इस साल धरने के तहत भारतीय हॉकी के गौरव मेजर ध्यानचंद व सागर विश्वविद्यालय के संस्थापक हरिसिंह गौर को भारतरत्न से अलंकृत करने, बुंदेलखंड को रेल सेवाओं से जोड़ने व अंचल में पर्यटन परिपथ विकसित करने की मांग मुख्य रूप से शामिल है। धरने को राज्यसभा

सदस्य व आम आदमी पार्टी के नेता संजय सिंह, पूर्व विधायक तरवर सिंह,आम आदमी पार्टी नेता अनीता सिंह, लोकतांत्रिक समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष शंभूदयाल बघेल, उपाध्यक्ष श्यामसुंदर यादव व मुकेश चंद्रा, जावेद लोसपा महासचिव, मध्यप्रदेश के अध्यक्ष विन्ध्येश्वरी पटेल, हरपाल सिंह, अनूप सिंह, अशोक पंडा, डॉ. शिवा श्रीवास्तव आदि ने संबोधित किया। रामकुमार पचौरी ने संचालन किया।

राष्ट्रीय तिलहन मिशन योजना अंतर्गत किसानों द्वारा प्रदर्शनी से ही नरवाई प्रबंधन यंत्रों की खरीदी की गई

तीन दिवसीय कृषि मेले का दूसरा दिन

धार । तीन दिवसीय कृषि मेले के दूसरे दिन कृषि मेले में कृषि मेले में राष्ट्रीय तिलहन मिशन योजना अन्तर्गत ज्ञानसिंह मोहनिया उप संचालक कृषि धार द्वारा तिलहनी फसलों के उत्पादन तकनीक एवं प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन एवं मार्केटिंग की जानकारी प्रदान की एवं कृषकों द्वारा कृषि प्रदर्शिनी से नरवाई प्रबंधन यंत्रों की खरीदी की गई।

मेले के तकनिकी सत्र में कृषि वैज्ञानिक डॉ. महेन्द्रसिंह जादोन कृषि विज्ञान केन्द्र देवास द्वारा मेले में कृषकों को मिट्टी परीक्षण प्रक्रिया मिट्टी नमूना लेना एवं मिट्टी में उपस्थित पौषक तत्वों के बारे में बताया तथा जैविक खाद् उपयोग करने के बारे में बताया गया। डॉ. एस. एस. चौहान वरिष्ठ एवं प्रमुख वैज्ञानिक कृषि विज्ञान केन्द्र धार द्वारा कृषकों को फसलों में संतुलित एवं अनुसंशित उर्वरकों के बारे में जागरुक किया गया साथ ही कृषि में जोखिम कम करने के लिए एकिकृत कृषि प्रणाली से अवगत कराया गया। डॉ. डी. एस. मण्डलोई द्वारा उद्यानिकी फसल की उत्पादन, उत्पादकता की जानकारी दी। कृषि वैज्ञानिक डॉ. अमृतलाल बसेडिया द्वारा

सोयाबीन फसल में मेड नाली पद्धति से बोनी करने पर अधिक पानी एवं कम पानी में भी फसल को नुकसान नहीं होता है एवं भूमि में नमी बनी रहती है जिससे उत्पादन में भी वृद्धि होती है। कृषि वैज्ञानिक डॉ. नरेश गुप्ता ने जैविक एवं प्राकृतिक खेती से तिलहनी फसल उगाकर शुद्ध तेल खाद्य पदार्थ में उपयोग की बात कही किसानों द्वारा तिलहनी फसल में विशेषकर सोयाबीन, मुंगफली में कीटनाश का उपयोग बहुतायत में होता है अब परिवर्तन लाये एवं प्राकृतिक तरीके से खेती कर तिलहनी फसलों का गुणवत्ता युक्त उत्पादन ले।

विकास चौरसिया प्रबंधक इफको द्वारा नैनो यूरिया, नैनों डीएपी एवं बायो-डीकम्पोजर का किस प्रकार उपयोग करना है की जानकारी दी। प्राकृतिक खेती करने वाली महिला कृषक छाया सौलंकी ग्राम अतरसुमा वि.ख. डही द्वारा अपने अनुभव साझा किये और प्राकृतिक खेती से अपने प्राकृतिक उत्पाद बेचकर एक लाख रूपये से भी अधिक आय अर्जित की है समर्थन संस्था एवं आत्मा के माध्यम से चार बायो रिसोर्स सेंटर स्थापित कर 300 से भी अधिक किसानों को जोडकर प्राकृतिक खेती के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। सामान्य वर्ग के लघु सीमान्त कृषक रोशन पिता सुभाष ग्राम ओसरा वि.ख. तिरला द्वारा नरवाई प्रबंधन के लिए कृषि कटाई यंत्र स्ट्रारिपर शासन की ई-कृषि अनुदान पोर्टल कृषि अभियांत्रिकी विभाग अन्तर्गत योजना से पंजीयन कर 50 प्रतिशत अनुदान (अधिकतम राशि रु. एक लाख पचास हजार मात्र) की सब्सिडी प्राप्त कर स्ट्रारिपर मेले की प्रदर्शिनी हरिश मशीनरी डीलर से खरीदा गया। कृषकों द्वारा लिये गये ज्ञान के आधार पर वैज्ञानिकों द्वारा पूछे गये प्रश्नों का उत्तर कृषकों द्वारा दिया गया जिन्हे पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इसी के साथ ही कोरोमंडल कम्पनी एवं आरएमपीसीएल कम्पनी के लक्की ड्रॉ में 5 कृषकों को पुरस्कार स्वरूप प्रदान किया गया। जिले के विभिन्न क्षेत्रो के लगभग 1000 से भी अधिक कृषक उपस्थित हुए। मुख्य अतिथि एवं अन्य जनप्रतिनिधियों द्वारा जिसका अवलोकन किया गया। कृषि मेले में अशोक डावर सभापति कृषि स्थाई समिति जिला पंचायत धार, कृषि एवं संबंद्ध विभाग, उद्यानिकी, पशुपालन, मत्स्य पालन, कृषि विज्ञान केन्द्र, कृषि अभियांत्रिकी द्वारा उन्नत कृषि यंत्र, राष्ट्रीय आजीविका मिशन, किसान उत्पादक संगठन, कृषि आदान विक्रेता, उर्वरक, बीज एवं किटनाशक कंपनी एवं डिलर, एन.जी.ओं. एकिकृत किट प्रबंधन संबंधि, एवं बायो एग्री इनपुट प्रोडक्ट संबंधी 80 से भी अधिक कृषि प्रदर्शिनी लगाई गई।

संक्षिप्त समाचार

एलपीजी के व्यावसायिक उपयोग को रोकने के लिए छापामार कार्रवाई जारी

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरू के. के निर्देशानुसार घरेलू गैस सिलेंडरों के व्यावसायिक उपयोग को रोकने के लिए खाद्य विभाग के अधिकारियों द्वारा जिले के विभिन्न व्यावसायिक संस्थानों, होटलों एवं प्रतिष्ठानों पर छापामार कार्रवाई की जा रही है। कार्रवाई में घरेलू गैस सिलेंडरों का व्यवसाय के लिए उपयोग करने वाली दुकानों एवं संस्थानों की जांच कर उपयोग किए जा रहे घरेलू गैस सिलेंडर जब्त किए जा रहे हैं एवं कार्रवाई की जा रही है। कनिष्ठ आपूर्ति अधिकारी श्री आकाश चंदेल ने बताया कि जांच के दौरान कुबेरेश्वर धाम स्थित 03 दुकानों एवं प्रतिष्ठानों का औचक निरीक्षण कर कार्रवाई करते हुए 05 घरेलू गैस सिलेंडर जब्त किए गए। यह कार्रवाई कनिष्ठ आपूर्ति अधिकारी श्री आकाश चंदेल एवं खाद्य विभाग के अधिकारियों-कर्मचारियों द्वारा की गई।

कलेक्टर के निर्देशानुसार अवैध खनिजों के उत्खनन और परिवहन पर की गई कार्रवाई

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरू के. के निर्देशानुसार जिले में अवैध खनिजों के उत्खनन एवं परिवहन की रोकथाम के लिए निरंतर कार्रवाई की जा रही है। इसी क्रम में बुधनी एवं रेहटी क्षेत्र अंतर्गत खनिज, राजस्व एवं पुलिस विभाग के संयुक्त दल द्वारा नर्मदा नदी से अवैध रेत उत्खनन करते हुए 01 पोकलेन एवं 01 जेसीबी मशीन जब्त की गई है। जिसे शाहगंज थाने की अभिरक्षा में रखा गया है।

इसी प्रकार टीम द्वारा रेत का अवैध परिवहन करते हुए 01 टेक्टर-ट्राली जब्त कर इछावर थाने की अभिरक्षा में रखा गया है तथा मुरूम खनिज का अवैध परिवहन करते हुए पाए गए 01 डम्पर जब्त कर रेहटी थाना की अभिरक्षा में रखा गया है। जिला खनिज अधिकारी श्री धर्मेंद चौहान बताया कि सभी वाहनों पर खनिज नियमों एवं प्रावधानों के अन्तर्गत प्रकरण दर्ज कर आगे की कार्यवाही की जा रही है।

राजस्व वसूली की समीक्षा बैठक में कलेक्टर श्री सूर्यवंशी सख्त

बैतूल (निप्र)। कलेक्टर श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी की अध्यक्षता में मंगलवार को तहसील कार्यालय में राजस्व कार्यों की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने राजस्व वसूली की वर्तमान प्रगति को असंतोषजनक बताते हुए नाराजगी व्यक्त की। उन्होंने कहा कि राजस्व वसूली में किसी भी प्रकार की लापरवाही स्वीकार नहीं की जाएगी। उन्होंने प्रतिदिन राजस्व वसूली में वृद्धि सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। वहीं समय पर राजस्व जमा नहीं करने वाले बकायादारों को तत्काल नोटिस जारी करने के निर्देश दिए गए। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने विशेष रूप से कॉलोनाइजरों द्वारा राजस्व जमा न करने के मामलों को गंभीरता से लेते हुए निर्देश दिए कि जो कॉलोनाइजर निर्धारित समय में टैक्स जमा नहीं कर रहे हैं उनके खिलाफ कुर्की आदि की कार्यवाही सुनिश्चित करें। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने कहा कि डायवर्सन, बंटवारा और नामांतरण से जुड़े प्रकरणों का प्राथमिकता के आधार पर निराकरण कर उन्हें तुरंत राजस्व पोर्टल पर दर्ज किया जाए। उन्होंने कहा कि नामांतरण, बंटवारा और डायवर्सन के लंबित मामलों में सभी पटवारी और आरआई अपने-अपने क्षेत्र के लंबित प्रकरणों की सूची बनाकर तय समयसीमा में उनका निराकरण सुनिश्चित करें। उन्होंने निर्देश दिए कि किए गए कार्य की नियमित समीक्षा की जाएगी। उन्होंने कहा कि यदि राजस्व वसूली और प्रकरणों के निराकरण में सुधार नहीं हुआ तो संबंधित अधिकारियों और कर्मचारियों की जवाबदेही तय की जाएगी।

पात्र उपभोक्ताओं को 28 फरवरी से पूर्व समाधान योजना का लाभ दिलाएं : प्रबंध संचालक ऋषि गर्ग

प्रबंध संचालक द्वारा नर्मदापुरम वृत्त की विद्युत आपूर्ति एवं विभागीय कार्यों की समीक्षा

नर्मदापुरम (निप्र)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के प्रबंध संचालक श्री ऋषि गर्ग ने कहा कि समाधान योजना 2025-26 के दूसरे चरण का लाभ पात्र हितग्राहियों को 28 फरवरी के पूर्व दिलाया जाए। चालू फरवरी माह एवं मार्च माह में सकल तकनीकी एवं वाणिज्यिक हानियों (एटीएण्डसी) को कम करने के लिए विक्रित यूनिट को बढ़ाया जाए तथा लक्ष्य के अनुसार राजस्व संग्रहण हेतु सघनता के साथ वसूली अभियान चलाया जाए। उन्होंने कहा कि स्मार्ट मीटर के फायदे और उपयोगिता को लेकर आमजन और उपभोक्ताओं में जनजागरूकता अभियान चलाया जाए।

ग्रामीण क्षेत्रों में पात्र उपभोक्ताओं को 5 रुपये में नवीन घरेलू और कृषि पम्प कनेक्शन प्रदाय किये जाएं। उन्होंने कहा कि उपभोक्ताओं को यह संदेश जाना चाहिए कि कंपनी उपभोक्ताओं के हितों को सर्वोपरि रखती है। प्रबंध संचालक श्री ऋषि गर्ग नर्मदापुरम जिले की विद्युत आपूर्ति और विभागीय कार्यों को लेकर नर्मदापुरम वृत्त में आयोजित समीक्षा

बैठक को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर मुख्य महाप्रबंधक (भोपाल क्षेत्र) श्री बी.बी.एस.परिहार एवं नर्मदापुरम वृत्त के महाप्रबंधक श्री विनोद भदौरिया, महाप्रबंधक (सूचना प्रौद्योगिकी) श्री अभिषेक मार्तण्ड, महाप्रबंधक (स्काडा) श्री रामेश्वर चतुर्वेदी, सभी उप महाप्रबंधक, प्रबंधक एवं जूनियर इंजीनियर मौजूद थे। प्रबंध संचालक श्री गर्ग ने कहा कि बिजली चोरी बहुल इलाकों में सघनता से चैकिंग अभियान संचालित करें तथा अनधिकृत विद्युत उपयोग की रोकथाम के लिए विद्युत अधिनियम की धाराओं के तहत वैधानिक कार्यवाही करें।

उन्होंने कहा कि बिजली चोरी रोकने हेतु कंपनी की ''इन्फॉर्मर स्कीम'' का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार कर आमजन को जानकारी दी जाए। बिलिंग इफिशिएंशी, कलेक्शन इफिशिएंशी को बढ़ाया जाए तथा ऐसे वितरण केन्द्रों जिनका प्रदर्शन अच्छा नहीं है, उन पर विशेष ध्यान दिया जाए। उन्होंने नर्मदापुरम वृत्त के जूनियर इंजीनियर से लेकर उप महाप्रबंधक को सचेत किया कि आगामी माहों में परफॉरमेंस में सुधार दिखाई देना चाहिए, ताकि उपभोक्ताओं के साथ-साथ कंपनी को इसका लाभ हो। प्रबंध संचालक ने कहा कि प्राकृतिक आपदा जैसे मामलों को छोड़कर किसी भी प्रकार की ट्रिपिंग बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

उन्होंने मैदानी स्तर उपकेन्द्रों, 33 केव्ही लाईनों, 11 केव्ही लाइनों के मैंटेनेंस पर विशेष ध्यान देने तथा ऐसे स्थानों जहां बार-बार वितरण ट्रांसफार्मर फेल होते हैं उनको चिन्हित कर तकनीकी खामियों को दूर करने के निर्देश दिए। नॉन पेयी उपभोक्ताओं की संख्या में कमी करते हुए पेयी उपभोक्ताओं की संख्या को बढ़ाया जाए।

सीएम हेल्पलाइन में प्राप्त शिकायतों के निराकरण को गंभीरता से लें तथा जिन उपभोक्ताओं से शिकायतें प्राप्त होती हैं उनको फोन अथवा भौतिक रूप से संपर्क कर उपभोक्ता संतोष में वृद्धि करें। लोक सेवा गारंटी के अंतर्गत आने वाली सेवाओं से संबंधित शिकायतों का समय-सीमा में निराकरण सुनिश्चित किया जाए।

उपभोक्ताओं सेवाओं में किसी प्रकार की कोताही न बरती जाए, उपभोक्ता सेवाओं में लापरवाही बरतने वाले और खराब परफॉरमेंस वाले कार्मिकों के विरूद्ध विभागीय कार्यवाही की जाएगी। प्रबंध संचालक ने रिवेम्प्ड डिस्ट्रीब्यूशन सेक्टर स्कीम (आरडीएसएस), एसएसटीडी, स्वयं का ट्रांसफॉर्मर योजना (ओवायटी) तथा अन्य योजनाओं की प्रगति की समीक्षा तथा योजनान्तर्गत सभी कार्यों को समय-सीमा में पूर्ण करने के निर्देश दिए। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के प्रबंध संचालक ने मीटर रीडिंग, बिल वितरण और राजस्व संग्रहण पर विशेष ध्यान देने के साथ ही बकायादार उपभोक्ताओं से अपील की है कि वे कनेक्शन कटने अथवा अन्य अप्रिय कार्यवाही से बचने के लिए देय तिथि से पहले बिजली बिल जमा करें तथा बकाया देयकों के भुगतान के लिए समाधान योजना का लाभ लें।

सांदीपनी स्कूल के विद्यार्थियों ने आईटीआई का शैक्षणिक भ्रमण किया

विदिशा (निप्र)। बरईपुरा में स्थित सांदीपनी हाई स्कूल के 55 विद्यार्थियों को आज शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई), विदिशा का शैक्षणिक भ्रमण कराया गया। भ्रमण का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा से अवगत कराना तथा उन्हें कौशल आधारित करियर विकल्पों के प्रति जागरूक करना था।

आईटीआई विदिशा में संस्थान के प्रशिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को संचालित विभिन्न ट्रेडों की विस्तृत जानकारी दी गई। इस दौरान इलेक्ट्रिशियन, फिटर, वेल्डर, सोलर टेक्नीशियन सहित अन्य तकनीकी पाठ्यक्रमों के प्रशिक्षण की प्रक्रिया, कार्यप्रणाली, रोजगार की संभावनाएँ एवं स्वरोजगार के अवसरों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया गया।

भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने आईटीआई की वर्कशॉप में चल रहे प्रायोगिक कार्यों का अवलोकन किया तथा तकनीकी मशीनों की कार्यप्रणाली को समझा। विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक अपने प्रश्न रखे, जिनका प्रशिक्षकों द्वारा सरल एवं सहज भाषा में समाधान किया गया। विद्यालय के शिक्षकों ने बताया कि इस प्रकार के शैक्षणिक भ्रमण से विद्यार्थियों को भविष्य में करियर चयन के लिए सही दिशा मिलती है तथा तकनीकी शिक्षा के प्रति रुचि विकसित होती है। आईटीआई प्रबंधन द्वारा भी विद्यार्थियों को कौशल आधारित शिक्षा अपनाने के लिए प्रेरित किया गया।

सामुदायिक वन संसाधन प्रबंधन पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न

बैतूल (निप्र)। मध्यप्रदेश शासन के जनजातीय कार्य विभाग द्वारा अनुसूचित जनजाति एवं अन्य परम्परागत वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006, नियम 2008 तथा संशोधित नियम 2012 के अंतर्गत वन अधिकारों की मान्यता के उद्देश्य से सामुदायिक वन संसाधन प्रबंधन विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह प्रशिक्षण जिला पंचायत सभा कक्ष में संपन्न हुआ। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी के मार्गदर्शन में आयोजित इस प्रशिक्षण में राज्य स्तरीय मास्टर ट्रेनर्स श्री रितेश देशमुख, सुश्री रेखा गुजरे एवं सहायक आयुक्त जनजातीय कार्य विभाग बैतूल श्री विवेक पाण्डेय द्वारा उपखण्ड स्तरीय वन अधिकार समिति के शासकीय सदस्यों तथा जिला स्तरीय मास्टर

ट्रेनर्स को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रशिक्षण के दौरान वन अधिकार अधिनियम, 2006 के प्रावधानों, सामुदायिक वन अधिकारों तथा धारा 3(1)(झ) में उल्लेखित सामुदायिक वन संसाधन के संरक्षण एवं प्रबंधन से संबंधित अधिकारों की मान्यता की प्रक्रिया पर विस्तार से जानकारी दी गई। कार्यक्रम में सामुदायिक वन अधिकारों के दावे प्रस्तुत करने से लेकर उन्हें मान्य अथवा अमान्य किए जाने की संपूर्ण प्रक्रिया पर विस्तृत चर्चा की गई। प्रथम दिवस के प्रशिक्षण में उपखण्ड स्तरीय वन अधिकार समिति के शासकीय सदस्य, जिनमें अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) अध्यक्ष, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत सचिव, अनुविभागीय अधिकारी (वन) सदस्य सहित जिला स्तरीय मास्टर ट्रेनर्स उपस्थित रहे। प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को वन अधिकार अधिनियम से संबंधित पुस्तिका एवं मार्गदर्शिका का फोल्डर भी प्रदान किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य सामुदायिक वन अधिकारों की प्रभावी मान्यता एवं क्रियान्वयन हेतु अधिकारियों को व्यवहारिक एवं कानूनी रूप से सशक्त बनाना रहा।

रेत, गिट्टी का अवैध परिवहन कर रहे 2 वाहनों को किया जप्त

बैतूल (निप्र)। कलेक्टर श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देशानुसार जिले में अवैध खनन, परिवहन एवं भंडारण के विरुद्ध विशेष अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत खनिज विभाग द्वारा 10 फरवरी को खनिज अमले के साथ जिले के विभिन्न क्षेत्रों में सघन दौरा कर आकस्मिक निरीक्षण किया गया। इस दौरान खनि निरीक्षक बैतूल द्वारा खनिज अमले के साथ मुलताई क्षेत्रांतर्गत ग्राम दुनावा के समीप से खनिज रेत के अवैध परिवहन में संलिप्त 1 वाहन ट्रेक्टर क्रमांक एमपी 28 एडी 1922 को जप्त कर पुलिस चौकी दुनावा की अभिरक्षा में खड़ा करवाया गया है।

कलेक्टर ने की कृषि, उद्यानिकी, खाद्य एवं खाद्य सुरक्षा विभाग की गतिविधियों की समीक्षा

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में बैठक आयोजित कर कृषि, खाद्य एवं खाद्य सुरक्षा विभाग के कार्यों और गतिविधियों की विस्तारपूर्वक समीक्षा की। बैठक में उन्होंने खाद-बीज की उपलब्धता, सार्वजनिक वितरण प्रणाली के संचालन के बारे में जानकारी लेते हुए अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग के अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि सभी पात्र हितग्राहियों को नियमित और निर्धारित मात्रा में राशन उपलब्ध कराया जाए, इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही स्वीकार नहीं की जाएगी। उन्होंने सार्वजनिक वितरण प्रणाली की दुकानों का नियमित निरीक्षण करने, पात्रता सूची का सत्यापन कराने तथा वितरण व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ बनाने के निर्देश दिए। खाद्य पदार्थों में मिलावट की रोकथाम को गंभीरता से लेते हुए कलेक्टर ने खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि बाजारों एवं प्रतिष्ठानों से नियमित रूप से फूड सैंपल लेकर परीक्षण कराया जाए तथा मिलावट पाए जाने पर संबंधितों के विरुद्ध कार्यवाही सुनिश्चित की जाए, ताकि आमजन को शुद्ध एवं सुरक्षित खाद्य सामग्री उपलब्ध हो सके। बैठक में कृषि विभाग की समीक्षा करते हुए कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने नरवाई जलाने की घटनाओं पर रोकथाम के लिए प्रभावी कार्ययोजना लागू करने के निर्देश दिए। उन्होंने किसानों को जागरूक करने, वैकल्पिक प्रबंधन तकनीकों को बढ़ावा देने तथा ग्राम स्तर पर निगरानी तंत्र मजबूत करने पर जोर दिया। उन्होंने उद्यानिकी विभाग के अधिकारियों निर्देश देते हुए कहा कि प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित करने के लिए व्यापक प्रचार-प्रसार, प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएं, जिससे किसान प्राकृतिक खेती को अपनाएं और उनकी लागत घटे और पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा मिल सके।

जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक सम्पन्न यातायात सुरक्षा उपायों पर हुआ मंथन

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता की अध्यक्षता में आज जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक कलेक्ट्रेट परिसर स्थित बेतवा सभागार में आयोजित की गई। बैठक में पुलिस अधीक्षक श्री रोहित काशवानी सहित समिति के सदस्य एवं विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे। बैठक में जिले में सड़क दुर्घटनाओं की स्थिति, यातायात प्रबंधन, ब्लैक स्पॉट चिन्हांकन, सड़क सुरक्षा संकेतकों की उपलब्धता तथा जागरूकता गतिविधियों की समीक्षा की गई। कलेक्टर श्री गुप्ता ने संबंधित विभागों को निर्देशित किया कि दुर्घटना संभावित स्थलों पर आवश्यक सुधारात्मक कार्य प्राथमिकता से किए जाएँ। उन्होंने कहा कि सड़क सुरक्षा हम सबकी नैतिक जिम्मेदारी हैं। पुलिस अधीक्षक श्री रोहित काशवानी ने यातायात नियमों के पालन, हेलमेट एवं सीट बेल्ट के अनिवार्य उपयोग तथा ओवरस्पीडिंग पर सख्त कार्रवाई की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यातायात नियमों के उल्लंघन पर सतत निगरानी रखी जा रही है। पुलिस अधीक्षक श्री काशवानी ने जिले में मॉडिफाई सायलेंसरों के संबंध में की गई कार्यवाही को रेखांकित करते हुए कहा कि विक्रेताओं के खिलाफ भी कार्यवाही की जाए।

बैठक में परिवहन, लोक निर्माण, स्वास्थ्य, शिक्षा एवं नगरीय निकाय विभागों से संबंधित विषयों पर भी चर्चा हुई। अधिकारियों को निर्देश दिए गए कि स्कूलों एवं सार्वजनिक स्थानों पर सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए जाएँ। अंत में कलेक्टर ने सभी विभागों को समन्वय के साथ कार्य करने तथा सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए ठोस कार्ययोजना तैयार करने के निर्देश दिए। पूर्व बैठक में लिए गए निर्णयों पर की गई कार्यवाहियों का पालन प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया।

रायसेन में 'सुरक्षित इंटरनेट दिवस-2026' पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

विद्यार्थियों को सुरक्षित, जिम्मेदार एवं विवेकपूर्ण डिजिटल व्यवहार का बताया महत्व

रायसेन (निप्र)। भारत सरकार, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के निर्देशानुसार सुरक्षित इंटरनेट दिवस-2026 के अवसर पर मंगलवार को रायसेन स्थित शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में विद्यार्थियों के लिए एक विशेष साइबर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र) रायसेन के सहयोग से किया गया। इस वर्ष सुरक्षित इंटरनेट दिवस की थीम 'स्मार्ट तकनीक, सुरक्षित विकल्प - कृत्रिम बुद्धिमत्ता के सुरक्षित और ज़िम्मेदार उपयोग की पड़ताल' रखी गई, जिसके अंतर्गत विद्यार्थियों को सुरक्षित, जिम्मेदार एवं विवेकपूर्ण डिजिटल व्यवहार के महत्व से अवगत कराया गया। कार्यक्रम में जिला सूचना विज्ञान अधिकारी श्री दीपेन्द्र कटियार द्वारा विद्यार्थियों को साइबर हाइजीन, सोशल मीडिया की सुरक्षित उपयोगिता, ऑनलाइन धोखाधड़ी से बचाव, डेटा गोपनीयता, डिजिटल फुटप्रिंट तथा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के सुरक्षित एवं नैतिक उपयोग जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर सरल एवं व्यवहारिक उदाहरणों के माध्यम से जानकारी दी गई। इस अवसर पर बताया गया कि वर्तमान डिजिटल युग में तकनीक का सही उपयोग जहां अनेक अवसर प्रदान करता है, वहीं असावधानी गंभीर साइबर जोखिमों को जन्म दे सकती है।

विद्यार्थियों को दी जानकारी

विद्यार्थियों को सुरक्षित पासवर्ड, फिशिंग से बचाव, ओटीपी साझा न करने, तथा ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर सतर्क रहने के लिए प्रेरित किया गया। कार्यक्रम के अंत में प्रतिभागियों के साथ संवाद सत्र आयोजित किया गया, जिसमें विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर विशेषज्ञों द्वारा दिए गए। महाविद्यालय प्रशासन ने इस प्रकार के जागरूकता कार्यक्रमों को विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी बताया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में महाविद्यालय के प्राचार्य, शिक्षकगण, छात्र-छात्राओं तथा राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र रायसेन की टीम का सक्रिय सहयोग रहा।

रेत/गिट्टी का अवैध परिवहन करते 08 वाहन जप्त

नर्मदापुरम (निप्र)। नर्मदापुरम जिले में अवैध रेत और गिट्टी परिवहन के खिलाफ जिला प्रशासन की कार्रवाई लगातार जारी है। कलेक्टर नर्मदापुरम सुश्री सोनिया मीना के निर्देश पर खनिज, राजस्व और पुलिस विभाग की संयुक्त टीम ने जिले में विभिन्न स्थानों पर कार्रवाई करते हुए 8 वाहनों को जप्त किया है। खनिज विभाग द्वारा 06 फरवरी 2026 को ग्राम-रामपुर गुर्रा, तहसील-इटारसी से 01 ट्रेक्टर ट्राली को रेत खनिज का अवैध परिवहन करते हुए जप्त कर पुलिस थाना गुर्रा की अभिरक्षा में रखा गया। 08 फरवरी 2026 को ग्राम-चौतलाय, तहसील-सिवनीमालवा से 02 डम्पर क्रमशः एम पी 04 जेड एक्स7155 एवं आर जे 17जी वी1230 को गिट्टी खनिज के ओवरलोड परिवहन करने पर जप्त कर पुलिस थाना सिवनीमालवा में खडे किए गए। 09 फरवरी 2026 को ग्राम-बान्द्राभान, तहसील-नर्मदापुरम से 05 डम्पर क्रमशः एम पी 04 एचई 4338, एमपी 37 जीए 1214, एमपी 04 एचई 5030, आरजे19 जीजे 0630 एवं एमपी 04जेडएस 4750 को रेत खनिज के ओवरलोड परिवहन करते हुए जप्त कर क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय प्रांगण नर्मदापुरम में खडे किए गए। उक्त कार्रवाई में जिला खनि अधिकारी दिवेश मरकाम, खनि निरीक्षक पिंकी चौहान, प्र0 खनि निरीक्षक कृष्णकांत सिंह परस्ते, सिपाही हेमन्त राज और होमगार्ड बल शामिल थे। जप्त वाहनों के विरूद्ध मध्यप्रदेश खनिज नियम 2022 के तहत कार्रवाई की जा रही है।

मध्यप्रदेश का पहला 'पेपरलेस' बजट 18 फरवरी को

सूटकेस की जगह टैबलेट, खजाना खोलेगी सरकार

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश सरकार 18 फरवरी को राज्य विधानसभा में अपना पहला पेपरलेस बजट पेश करेगी। इस साल से बजट की मोटी-मोटी किताबों की जगह सिर्फ वित्त मंत्री का भाषण और एक बजट हैंडआउट छपेगा। यह राज्य में ई-ऑफिस और ई-कैबिनेट सिस्टम लागू होने के बाद हो रहा है। सरकार इस साल कृषि क्षेत्र पर ज्यादा ध्यान देगी, क्योंकि 2026 को कृषि वर्ष घोषित किया गया है। साथ ही, 2028 में होने वाले सिंहस्थ के लिए भी बजट में अच्छी-खासी राशि का प्रावधान हो सकता है।

बजट में इस साल नए तरीके- सरकार ने इस साल के बजट में कुछ नए तरीके भी अपनाए हैं। विकास परियोजनाओं और घोषणाओं को जारी रखने के लिए, सरकार अगले साल से 'नॉन-बजटरी प्रोविजन्स' (गैर-बजटीय प्रावधान) का इस्तेमाल करेगी। इसका मतलब है कि सरकारी परियोजनाओं का खर्च राज्य के अपने उद्यमों, बोर्डों और निगमों के फंड से उठाया जाएगा। यह सीधे तौर पर राज्य के सालाना बजट का हिस्सा नहीं होगा, लेकिन राज्य की वित्तीय गतिविधियों को प्रभावित करेगा।

पिछले साल से बड़ा होगा बजट- इस साल राज्य का बजट पिछले साल से बड़ा होगा, लेकिन केंद्र से मिलने वाले टैक्स के हिस्से में कमी आने के कारण यह उम्मीद से थोड़ा कम रहेगा। सरकार ने 2028 तक राज्य के बजट को 7.28 लाख करोड़ रुपये तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा था। वित्तीय वर्ष 2025-26 में राज्य का बजट 4.21 लाख करोड़ रुपये था, और 2026-27 के लिए यह करीब 4.80 लाख करोड़ रुपये होने का अनुमान था।

क्या कह रहे वित्त विभाग के अधिकारी

हालांकि, केंद्र सरकार द्वारा मध्य प्रदेश के केंद्रीय करों में हिस्सेदारी कम करने से राज्य के बजट का आकार लगभग 8,000 करोड़ रुपये तक सिकुड़ जाएगा। पहले जहां एमपी की हिस्सेदारी 7.850 प्रतिशत थी, वह घटकर 7.347 प्रतिशत हो गई है। वित्त विभाग के अधिकारियों का कहना है कि इससे अगले पांच सालों में एमपी को केंद्र से सालाना करीब 7,500 करोड़ रुपये कम मिलेंगे, जिससे राज्य की वित्तीय स्थिति पर और दबाव बढ़ेगा।

बजट में इस साल नया प्रयोग

मुख्यमंत्री मोहन यादव ने 10 फरवरी को बजट प्रस्तावों को अंतिम रूप दिया और कहा कि ये प्रस्ताव वर्तमान संदर्भ के लिए बेहतर हैं। इस साल बजट में एक और नया प्रयोग किया जा रहा है, जिसे 'रोलिंग बजट' कहा जा रहा है। इसमें 2026-27, 2027-28 और 2028-29 के लिए बजट तैयार किए जाएंगे, जिनकी सालाना समीक्षा और समायोजन होगा। सरकार का कहना है कि इससे नीतियां लंबी अवधि के लिए और दूरदर्शी बनेंगी। पिछले साल, राज्य सरकार ने 'जीरो-बेस्ड बजटिंग' (शून्य-आधारित बजटिंग) भी शुरू की थी, जिसमें हर साल सभी खर्चों को नए सिरे से साबित करना पड़ता है।

याद आ गई जुदाई फिल्म की कहानी

महिला अधिकारी ने 12 साल छोटे प्रेमी को उसकी पत्नी से डेढ़ करोड़ में 'खरीदा'!

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कुटुंब न्यायालय में हाल ही में एक ऐसा मामला सामने आया है, जिसने 90 के दशक की ब्लॉकबस्टर फिल्म 'जुदाई' की यादें ताजा कर दीं। भोपाल के एक परिवार में शांति बहाली के लिए रिश्तों का बाकायदा वित्तीय समझौता किया है। एक महिला ने अपनी गृहस्थी में जहर घोल रही 'सौतन' से करीब डेढ़ करोड़ रुपये की संपत्ति और कैश लेकर अपने पति को हमेशा के लिए उसके नाम कर दिया। शहर के न्यायिक गलियारों में इस 'महंगे तलाक' की चर्चा हर तरफ है।

सरकारी विभाग में हैं कार्यरत

मामला केंद्रीय सरकारी विभाग का है। यहां तैनात एक 42 वर्षीय अधिकारी का प्रेम प्रसंग अपनी ही सहकर्मी के साथ शुरू हुआ। दिलचस्प बात यह है कि प्रेमिका की उम्र 54 वर्ष है, जो अधिकारी से उम्र में 12 साल बड़ी है। इस प्रेम के परवान चढ़ते ही अधिकारी ने अपने घर, पत्नी और दो मासूम बेटियों की अनदेखी शुरू कर दी। घर में आए दिन होने वाले विवादों ने वातावरण को बोझिल बना दिया था।

बेटियों पर पड़ रहा था असर

माता-पिता के बीच हर दिन होने वाली 'महाभारत' का सबसे बुरा असर 16 और 12 साल की दो बेटियों पर पड़ रहा था। मानसिक अवसाद से जूझ रही बड़ी बेटी ने हिम्मत दिखाई और मामले को कुटुंब न्यायालय तक ले गई। काउंसलिंग सत्र के दौरान पति ने दो टूक शब्दों में कह दिया कि वह अपनी पत्नी के साथ खुश नहीं है और उसे अपनी सहकर्मी (प्रेमिका) के साथ ही मानसिक शांति मिलती है। जब रिश्ता जुड़ना नामुमकिन है, तो पत्नी ने एक व्यावहारिक रास्ता चुना।

मान ली यह शर्त

उसने मांग रखी कि बेटियों के भविष्य और गुजर-बसर के लिए उसे एक शानदार डुप्लेक्स मकान और 27 लाख रुपये नकद दिए जाएं। हैरत की बात यह रही कि पति की प्रेमिका ने बिना किसी हिचकिचाहट के यह शर्त मान ली। प्रेमिका का तर्क था कि वह अपने साथी के परिवार को बेसहारा नहीं देखना चाहती, इसलिए वह अपनी जीवन भर की जमापूंजी इस सौदे में लगाने को तैयार है।

पारिवारिक मामलों के काउंसलर्स का मानना है कि जहां भावनाएं खत्म हो जाएं, वहां जबरन साथ रहने से बेहतर सम्मानजनक विदाई होती है। यह निर्णय भले ही समाज को अजीब लगे, लेकिन बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य और वित्तीय सुरक्षा के नजरिए से यह एक तार्किक कदम है। जब रिश्ता केवल बोझ बन जाए तो शांति के लिए अलग होना ही अच्छा है।

दो ताप विद्युत यूनिट ने बनाए 500 और 100 दिन बिना रूके उत्पादन करने के रिकॉर्ड

भोपाल। मध्यप्रदेश पॉवर जनरेटिंग कंपनी की दो ताप विद्युत यूनिट ने शुक्रवार को बिना रूके लगातार विद्युत उत्पादन करने का नया रिकार्ड बनाया। अमरकंटक ताप विद्युत गृह चचाई (ATPS) की 210 मेगावाट क्षमता की यूनिट नंबर 5 ने 500 दिन और सतपुड़ा ताप विद्युत गृह सारनी (STPS) की 250 मेगावाट क्षमता की यूनिट नंबर 10 ने 100 दिन बिना रूके लगातार विद्युत उत्पादन करने का रिकॉर्ड बनाया। उपलब्ध जानकारी के अनुसार अमरकंटक ताप विद्युत गृह की यूनिट नंबर 5 देश के सार्वजनिक क्षेत्र की तीसरी व स्टेट सेक्टर की प्रथम विद्युत यूनिट है जिसने लगातार 500 दिन विद्युत उत्पादन करने का रिकार्ड बनाया है। यह यूनिट 1 अक्टूबर 2024 से सतत् विद्युत उत्पादन कर रही है। सार्वजनिक क्षेत्र में एनटीपीसी की दो यूनिट क्रमशः 644 व 559 दिन तक संचालित रही हैं।

पेशेवर रूख, प्रतिबद्धता और तकनीकी काबिलियत का उदाहरण है चचाई यूनिट- ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने कहा कि यह गर्व की बात है कि पावर जनरेटिंग कंपनी के इतिहास में किसी भी बिजली बनाने वाली यूनिट द्वारा हासिल किया गया लगातार चलने का अब तक का सबसे बड़ा रिकॉर्ड है। उन्होंने कहा कि बिना किसी बड़े आउटेज के इतने लंबे समय (500 दिन) तक बिना रुके विद्युत ऑपरेशन जारी रखना अमरकंटक ताप विद्युत गृह चचाई के पेशेवर रूख, प्रतिबद्धता व तकनीकी काबिलियत का उदाहरण है।

अमरकंटक ताप विद्युत गृह चचाई की यूनिट नंबर 5 हासिल किए उच्च मापदंड- अमरकंटक ताप विद्युत गृह चचाई की यूनिट नंबर 5 ने 500 दिन बिना रूके शानदार प्रदर्शन में इंडेक्स प्लांट टीम द्वारा लगातार बनाई गई क्षमता, विश्वसनीयता और तकनीकी उत्कृष्टता के उच्च मापदंड स्पष्ट रूप से दिखते हैं। यूनिट नंबर 5 ने 98.64 फीसदी प्लांट अवेलेबिलिटी फेक्टर (पीएएफ), 95.30 फीसदी प्लांट लोड फेक्टर (पीएलएफ) व 9.28 प्रतिशत ऑक्जलरी कंजम्पशन हासिल किया है।

अमरकंटकताप विद्युत गृह चचाई की यूनिट नंबर 5 नाट आउट 500 दिन

सतपुड़ा ताप विद्युत गृह सारनी की यूनिट नंबर 10 ने किया 100 दिन सतत् विद्युत उत्पादन

सतपुड़ा ताप विद्युत गृह सारनी की 250 मेगावाट क्षमता की यूनिट नंबर 10 ने 100 दिन लगातार विद्युत उत्पादन करने का रिकार्ड बनाया। यह यूनिट 5 नवम्बर 2025 से लगातार विद्युत उत्पादन कर रही है। यूनिट ने इस दौरान 100.16 फीसदी प्लांट अवेलेबिलिटी फेक्टर (पीएएफ), 92.85 फीसदी प्लांट यूटिलाइजेशन फेक्टर (पीएलएफ) व 8.23 प्रतिशत ऑक्जलरी खपत को हासिल कर ऑपरेशनल विश्वसनीयता व दक्षता का प्रदर्शन किया। सारनी की यूनिट नंबर 10 इससे पूर्व इसी वित्तीय वर्ष में 200 दिन से अधिक तक लगातार विद्युत उत्पादन करने का रिकार्ड बना चुकी है।